नवसर्जन संस्कृति

PRGI No. GJHIN/25/A2786

नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 01
अंक : 252
दि. 15.06.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

आग की अफवाह बनी मौत का कारण: ट्रेन से कूदे यात्री दूसरी ट्रेन की चपेट में आए, 8 की मौत

मुरैना। मध्य प्रदेश के मुरैना जिले में रविवार को एक भयावह रेल हादसे ने आठ परिवारों की खुशियां छीन लीं। एक मामूली अफवाह ने देखते ही देखते ऐसा रूप ले लिया कि कई यात्रियों की जान चली गई। खजुराहो-उदयपुर इंटरसिटी एक्सप्रेस में आग लगने की खबर फैलते ही यात्रियों में दहशत फैल गई। जान बचाने की कोशिश में कई लोग ट्रेन से उतरकर रेलवे ट्रैक पर पहुंच गए, लेकिन उन्हें अंदाजा भी नहीं था कि दूसरी पटरी पर मौत उनकी ओर तेजी से बढ़ रही है। कुछ ही क्षणों बाद वहां से गुजर रही पातालकोट एक्सप्रेस की चपेट में आने से आठ यात्रियों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कई अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। इस दर्दनाक हादसे ने एक बार फिर अफवाहों के खतरनाक परिणाम और रेलवे ट्रैक पर उतरने के जोखिम को उजागर कर दिया है।

यह हादसा सरायछौला थाना क्षेत्र के हेतमपुर स्टेशन के पास रविवार दोपहर करीब 4:15 बजे हुआ। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, खजुराहो-उदयपुर इंटरसिटी एक्सप्रेस के एक सामान्य डिब्बे में किसी यात्री के मोबाइल फोन में आग लगने की अफवाह फैल गई। कुछ ही मिनटों में यह बात पूरे डिब्बे और फिर अन्य कोचों तक पहुंच गई। अचानक मची अफरा-तफरी के बीच किसी यात्री ने आपातकालीन चेन खींच दी, जिससे ट्रेन बीच ट्रैक पर रुक गई।

ट्रेन रुकते ही भयभीत यात्री बिना स्थिति की पुष्टि किए डिब्बों से उतरने लगे। कई लोग बच्चों और परिजनों को लेकर जल्दबाजी में दूसरी पटरी की ओर भागे। इसी दौरान दूसरी दिशा से फिरोजपुर-सिवनी पातालकोट एक्सप्रेस तेज गति से वहां पहुंच गई। ट्रैक पर मौजूद यात्रियों को संभलने या हटने का मौका तक नहीं मिला और वे ट्रेन की चपेट में आ गए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार हादसा इतना अचानक हुआ कि चीख-पुकार से पूरा इलाका गूंज उठा।

मृतकों में महिलाओं और बच्चों सहित आठ लोगों की जान चली गई। प्रशासन ने अब तक चार मृतकों की पहचान की है। इनमें आगरा निवासी 35 वर्षीय आफरीन, उनका चार वर्षीय पुत्र असद खान, आगरा के रुनकता क्षेत्र की 60 वर्षीय शकुंतला परमार तथा राजस्थान के बीकानेर जिले की 60 वर्षीय विरमा देवी शामिल हैं। अन्य मृतकों की पहचान की प्रक्रिया जारी है। घायलों को तत्काल नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया, जहां कुछ की हालत गंभीर बताई जा रही है।

घटना की सूचना मिलते ही रेलवे प्रशासन, रेल सुरक्षा बल (आरपीएफ), सरकारी रेलवे पुलिस (जीआरपी) और स्थानीय प्रशासन के अधिकारी मौके पर पहुंच गए। राहत और बचाव कार्य तत्काल शुरू किया गया। रेलवे ट्रैक से घायलों को निकालकर एंबुलेंस के माध्यम से अस्पताल पहुंचाया गया। वरिष्ठ अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण कर स्थिति का जायजा लिया।

उत्तर मध्य रेलवे ने आधिकारिक बयान जारी करते हुए बताया कि गाड़ी संख्या 19665 खजुराहो-उदयपुर इंटरसिटी एक्सप्रेस में अलार्म चेन खींचे जाने के कारण ट्रेन बीच मार्ग में रुक गई थी। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि कुछ यात्री ट्रेन से उतरकर समीपवर्ती ट्रैक पर चले गए थे, जहां वे दूसरी दिशा से आ रही पातालकोट एक्सप्रेस की चपेट में आ गए। रेलवे ने कहा कि पूरे मामले की विस्तृत जांच कराई जा रही है और दुर्घटना के वास्तविक कारणों का पता लगाया जाएगा।

रेलवे अधिकारियों का कहना है कि शुरुआती संकेत बताते हैं कि हादसे की जड़ में आग लगने की अफवाह थी। अब यह जांच की जा रही है कि अफवाह कैसे फैली, किसने सबसे पहले यह सूचना दी और क्या वास्तव में किसी मोबाइल फोन या अन्य उपकरण में कोई तकनीकी खराबी हुई थी। साथ ही यह भी जांच का विषय है कि ट्रेन रुकने के बाद यात्रियों को सुरक्षित रखने के लिए क्या कदम उठाए गए और किन परिस्थितियों में इतनी बड़ी संख्या में लोग ट्रैक पर उतर गए। विशेषज्ञों का मानना है कि रेलवे ट्रैक पर उतरना हमेशा अत्यंत जोखिम भरा होता है। कई बार यात्री यह समझ लेते हैं कि यदि एक ट्रैक पर ट्रेन खड़ी है तो दूसरा ट्रैक भी सुरक्षित होगा, जबकि वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत है। रेलवे लाइनों पर किसी भी समय दूसरी दिशा से ट्रेन आ सकती है और ऐसे हादसे कुछ ही सेकंड में हो जाते हैं।

इस दर्दनाक दुर्घटना ने यात्रियों की सुरक्षा और जागरूकता को लेकर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। हर वर्ष रेलवे बार-बार चेतावनी देता है कि बिना अनुमति ट्रेन से नीचे न उतरें और किसी भी आपात स्थिति में रेलवे कर्मचारियों के निर्देशों का पालन करें, लेकिन अफवाह और घबराहट के कारण लोग अक्सर ऐसे कदम उठा लेते हैं जो जानलेवा साबित होते हैं।

हादसे के बाद रेलवे ने यात्रियों से अपील की है कि किसी भी तरह की अफवाह पर तुरंत विश्वास न करें, आपात स्थिति में रेलवे कर्मचारियों से संपर्क करें और बिना आवश्यकता ट्रेन से नीचे न उतरें। रेलवे हेल्पलाइन 139 पर सहायता प्राप्त की जा सकती है। अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि रेलवे ट्रैक पर चलना या खड़ा होना बेहद खतरनाक है और ऐसी लापरवाही कभी-कभी पल भर में जीवन समाप्त कर सकती है।

मुरैना की यह घटना केवल एक रेल दुर्घटना नहीं, बल्कि अफवाह, घबराहट और असावधानी के खतरनाक परिणामों की दर्दनाक याद दिलाती है। जिन यात्रियों ने आग से बचने के लिए ट्रेन छोड़ी थी, वे शायद नहीं जानते थे कि कुछ कदम दूर ही मौत उनका इंतजार कर रही है। आठ लोगों की मौत ने कई परिवारों को गहरे सदमे में डाल दिया है और पूरे क्षेत्र में शोक का माहौल है। अब सभी की नजर रेलवे जांच पर टिकी है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि आखिर वह कौन सी चूक थी जिसने आठ जिंदगियां निगल लीं।

आंधी-बारिश की दस्तक से बदलेगा यूपी का मौसम, सात दिनों तक सतर्कता की जरूरत; किसानों के लिए

प्रयागराज। भीषण गर्मी और उमस से जूझ रहे उत्तर प्रदेश के लोगों को आने वाले दिनों में राहत मिलने की उम्मीद है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में अगले सात दिनों तक मौसम के बदले हुए मिजाज का अनुमान जताया है। मौसम विभाग के अनुसार 14 से 20 जून के बीच पूर्वी और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अनेक जिलों में गरज-चमक के साथ बारिश, तेज हवाएं और कहीं-कहीं आंधी चलने की संभावना है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि बंगाल की खाड़ी और अरब सागर से आ रही नमी तथा सक्रिय मौसमी प्रणालियों के प्रभाव से प्रदेश में प्री-मानसून गतिविधियां तेज हो रही हैं, जिसके कारण तापमान में गिरावट और वर्षा की स्थितियां बन रही हैं। मौसम विभाग ने विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश के जिलों के लिए चेतावनी जारी की है। विभाग के अनुसार 14 और 15 जून को कई क्षेत्रों में 50 से 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चल सकती हैं। कुछ स्थानों पर हवा की गति 70 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंचने की भी आशंका जताई गई है। तेज हवाओं के साथ गरज-चमक और बिजली गिरने की घटनाएं भी हो सकती हैं। ऐसे में लोगों को खुले स्थानों पर जाने से बचने और खराब मौसम के दौरान सुरक्षित स्थानों पर रहने की सलाह दी गई है।

मौसम में यह बदलाव केवल आम जनजीवन को ही प्रभावित नहीं करेगा, बल्कि कृषि गतिविधियों पर भी इसका व्यापक असर पड़ सकता है। इसी को देखते हुए कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों के लिए विशेष परामर्श जारी किया है। चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के कृषि मौसम वैज्ञानिक डॉ. एस.एन. सुनील पांडेय ने किसानों से मौसम की स्थिति को ध्यान में रखते हुए खेती-किसानी के कार्यों की योजना बनाने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि जिन किसानों ने धान की नर्सरी तैयार कर ली है, वे खेतों में जल निकासी की उचित व्यवस्था सुनिश्चित करें, ताकि अत्यधिक वर्षा होने की स्थिति में फसल को नुकसान न पहुंचे।

विशेषज्ञों का कहना है कि तेज हवाओं और बारिश के दौरान खेतों में अनावश्यक रूप से काम करने से बचना चाहिए। आकाशीय बिजली की घटनाएं इस दौरान जानलेवा साबित हो सकती हैं। किसानों और ग्रामीणों को सलाह दी गई है कि गरज-चमक के समय खुले खेतों, ऊंचे पेड़ों, बिजली के खंभों तथा धातु की वस्तुओं से दूर रहें। यदि मौसम अचानक खराब हो जाए तो तुरंत किसी सुरक्षित भवन या आश्रय स्थल में शरण लें। खेतों में काम कर रहे श्रमिकों और पशुपालकों को भी विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है।

मौसम विशेषज्ञों ने यह भी कहा है कि कटाई के बाद खेतों में रखी गई उपज को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया जाए, ताकि बारिश और तेज हवाओं से नुकसान न हो। पशुपालकों को अपने पशुओं को खुले स्थानों के बजाय सुरक्षित शेड या बाड़ों में रखने की सलाह दी गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली गिरने की घटनाएं अक्सर जान-माल का बड़ा नुकसान करती हैं, इसलिए मौसम विभाग की चेतावनियों को गंभीरता से लेना आवश्यक है।

हालांकि कृषि विशेषज्ञों का मानना है कि यह मौसम खरीफ फसलों की तैयारी के लिए काफी अनुकूल साबित हो सकता है। बारिश से मिट्टी में नमी बढ़ेगी और धान, मक्का, बाजरा तथा अन्य खरीफ फसलों की बुवाई की तैयारी को गति मिलेगी। इससे किसानों को सिंचाई पर होने वाला अतिरिक्त खर्च भी कम करना पड़ सकता है। लेकिन इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि किसान मौसम की ताजा जानकारी लगातार प्राप्त करते रहें और कृषि विभाग द्वारा जारी परामर्शों का पालन करें।

प्रदेश के कई हिस्सों में पिछले कुछ दिनों से तापमान सामान्य से अधिक बना हुआ था, जिससे लोगों को भीषण गर्मी का सामना करना पड़ रहा था। मौसम विभाग का अनुमान है कि बारिश और बादलों की आवाजाही के कारण अधिकतम तापमान में गिरावट दर्ज हो सकती है और लोगों को गर्मी से राहत मिलेगी। हालांकि तेज हवाओं और गरज-चमक के कारण कुछ स्थानों पर जनजीवन प्रभावित होने की भी आशंका है।

मौसम विभाग ने नागरिकों से अपील की है कि वे अफवाहों पर ध्यान न दें और केवल आधिकारिक मौसम बुलेटिन तथा प्रशासनिक निर्देशों का पालन करें। विशेषज्ञों का कहना है कि बदलते मौसम के इस दौर में सतर्कता ही सुरक्षा का सबसे बड़ा उपाय है। आने वाले सात दिन जहां एक ओर गर्मी से राहत लेकर आ सकते हैं, वहीं दूसरी ओर आंधी, बिजली और तेज हवाओं के कारण सावधानी बरतना भी उतना ही जरूरी होगा। किसानों, ग्रामीणों और आम नागरिकों के लिए यह समय मौसम पर लगातार नजर बनाए रखने और सुरक्षा संबंधी सभी आवश्यक उपाय अपनाने का है।

आस्था की यात्रा बनी अंतिम सफर: पंढरपुर लौट रहे श्रद्धालुओं से भरी पिकअप कुएं में गिरी, 14 जिंदगियां एक झटके में खत्म

सोलापुर/पंढरपुर। महाराष्ट्र के सोलापुर जिले में रविवार को हुआ एक भीषण सड़क हादसा पूरे राज्य को स्तब्ध कर गया। भगवान के दर्शन कर घर लौट रहे श्रद्धालुओं की खुशियां कुछ ही पलों में मातम में बदल गईं, जब श्रद्धालुओं से भरी एक पिकअप वैन अनियंत्रित होकर सड़क किनारे स्थित गहरे कुएं में जा गिरी। इस भयावह दुर्घटना में महिलाओं और मासूम बच्चों सहित 14 लोगों की मौत हो गई, जबकि दो लोगों को जीवित बचा लिया गया। हादसे की खबर फैलते ही पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई और मृतकों के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया।

जानकारी के अनुसार, पंढरपुर तालुका के रंजनी गांव के निवासी श्रद्धालुओं का एक समूह म्हसवाड स्थित प्रसिद्ध सिद्धनाथ मंदिर में दर्शन और पूजा-अर्चना करने गया था। धार्मिक अनुष्ठान पूरा करने के बाद सभी लोग एक पिकअप वाहन में सवार होकर अपने गांव लौट रहे थे। यात्रा सामान्य रूप से चल रही थी और किसी को इस बात का अंदाजा भी नहीं था कि कुछ ही देर में यह सफर एक दर्दनाक त्रासदी में बदल जाएगा। तांडलवाड़ी गांव के निकट पहुंचते ही अचानक चालक का वाहन पर से नियंत्रण हट गया। तेज रफ्तार पिकअप सड़क से फिसलती हुई सीधे पास में स्थित पानी से भरे कुएं में जा गिरी।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार दुर्घटना इतनी अचानक हुई कि वाहन में बैठे लोगों को संभलने या बाहर निकलने का कोई अवसर नहीं मिला। पिकअप के कुएं में गिरते ही चीख-पुकार मच गई। आसपास के ग्रामीण दौड़कर मौके पर पहुंचे और अपनी जान की परवाह किए बिना राहत कार्य शुरू कर दिया। ग्रामीणों ने रस्सियों और स्थानीय संसाधनों की मदद से लोगों को बाहर निकालने का प्रयास किया, लेकिन वाहन काफी गहराई तक पानी में डूब चुका था। सूचना मिलने के बाद पुलिस, प्रशासन, आपदा प्रबंधन दल और चिकित्सा टीमें भी घटनास्थल पर पहुंच गईं।

कई घंटों तक चले राहत और बचाव अभियान के दौरान एक-एक कर शवों को बाहर निकाला गया। प्रशासनिक अधिकारियों ने बताया कि मृतकों में बड़ी संख्या में महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार कम से कम चार महिलाएं और चार बच्चे हादसे में जान गंवा चुके हैं, जबकि कुछ रिपोर्टों में बच्चों की संख्या इससे अधिक बताई जा रही है। बताया जा रहा है कि वाहन में एक ही परिवार तथा उसके रिश्तेदारों के कई सदस्य सवार थे, जिसके कारण यह हादसा कई परिवारों के लिए अपूरणीय क्षति बन गया है।

हादसे के बाद घटनास्थल का दृश्य बेहद मार्मिक था। कुएं के आसपास बड़ी संख्या में ग्रामीण और मृतकों के परिजन जमा हो गए। अपने प्रियजनों की तलाश में परिजनों की चीखें और विलाप सुनकर वहां मौजूद लोगों की आंखें भी नम हो गईं। बचाव दल के सदस्य लगातार कुएं में उतरकर लोगों को बाहर निकालने में जुटे रहे। दो लोगों को जीवित बाहर निकालने में सफलता मिली, जिन्हें तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया। चिकित्सकों के अनुसार उनकी हालत पर लगातार नजर रखी जा रही है। इस दुर्घटना ने सड़क किनारे स्थित खुले कुओं की सुरक्षा व्यवस्था पर भी गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि जिस कुएं में वाहन गिरा, उसके चारों ओर कोई मजबूत सुरक्षा रेलिंग या घेराबंदी नहीं थी। यदि वहां उचित सुरक्षा प्रबंध किए गए होते तो वाहन सीधे कुएं में गिरने से बच सकता था और संभवतः इतनी बड़ी जनहानि नहीं होती। ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि सड़कों के किनारे स्थित सभी खुले कुओं और जलाशयों के आसपास सुरक्षा दीवार या रेलिंग लगाई जाए, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

प्रारंभिक जांच में माना जा रहा है कि चालक के वाहन पर से नियंत्रण खो देने के कारण यह दुर्घटना हुई, लेकिन पुलिस और प्रशासन ने विस्तृत जांच शुरू कर दी है। अधिकारियों का कहना है कि वाहन की स्थिति, चालक की भूमिका, सड़क की दशा और अन्य संभावित कारणों की जांच की जाएगी। जांच रिपोर्ट आने के बाद ही दुर्घटना के वास्तविक कारणों का स्पष्ट पता चल सकेगा।

एक साथ 14 लोगों की मौत ने रंजनी गांव को गहरे सदमे में डाल दिया है। गांव में हर तरफ मातम पसरा हुआ है। जिन घरों में सुबह तक धार्मिक यात्रा की खुशी थी, वहां अब शोक और सन्नाटा छाया हुआ है। स्थानीय जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों ने पीड़ित परिवारों से मुलाकात कर संवेदना व्यक्त की है तथा हर संभव सहायता का आश्वासन दिया है।

यह दर्दनाक हादसा एक बार फिर इस बात की याद दिलाता है कि सड़क सुरक्षा और सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षा इंतजामों में छोटी सी लापरवाही भी कितनी बड़ी त्रासदी का कारण बन सकती है।

फ्रांस में गूंजा भारत का नवाचार मॉडल, पीएम मोदी बोले- नवाचार हमारे डीएनए में; मैक्रों ने भारत को बताया भविष्य की तकनीकी शक्ति

नीस (फ्रांस)। भारत अब केवल दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र या तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था भर नहीं रह गया है, बल्कि वह वैश्विक नवाचार, तकनीकी विकास और स्टार्टअप क्रांति का एक सशक्त केंद्र बनकर उभर रहा है। फ्रांस के नीस शहर में आयोजित 'भारत इनोवेट्स 2026' कार्यक्रम में यह संदेश पूरे विश्व के सामने मजबूती से सामने आया, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने संयुक्त रूप से कार्यक्रम का उद्घाटन किया। दोनों नेताओं ने भारत और फ्रांस के बीच तकनीकी सहयोग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वच्छ ऊर्जा, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्रों में साझेदारी को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने की प्रतिबद्धता जताई।

कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि नवाचार भारत के डीएनए में है और भारतीय युवाओं की रचनात्मक सोच आज दुनिया की जटिल चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत कर रही है, जबकि राष्ट्रपति मैक्रों ने भारत को भविष्य की तकनीकी दुनिया का प्रमुख केंद्र बताते हुए उसकी उपलब्धियों की खुलकर सराहना की।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि पिछले एक दशक में भारत ने जिस प्रकार तकनीकी और आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तनकारी कदम उठाए हैं, उसने देश को वैश्विक मंच पर एक नई पहचान दिलाई है। उन्होंने कहा कि आज भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन चुका है और लाखों युवा अपने नवाचारों के माध्यम से नई संभावनाओं के द्वार खोल रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत की ताकत केवल उसकी विशाल जनसंख्या नहीं है, बल्कि वह प्रतिभा, नवाचार और समस्याओं को अवसरों में बदलने की क्षमता है। उन्होंने कहा कि देश का लक्ष्य ऐसी तकनीक विकसित करना है जो मानव जीवन को सरल, सुरक्षित और बेहतर बनाए तथा जिसका लाभ केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को मिले।

प्रधानमंत्री ने कहा कि 21वीं सदी का भारत सूचना क्रांति से आगे बढ़कर अब स्टार्टअप क्रांति का नेतृत्व कर रहा है। देश के छोटे शहरों और गांवों से निकलने वाले युवा आज वैश्विक स्तर की तकनीकी कंपनियां खड़ी कर रहे हैं। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया और स्किल इंडिया जैसी पहलों ने युवाओं को नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। उन्होंने कहा कि भारत का नवाचार मॉडल समावेशी विकास पर आधारित है, जहां तकनीक केवल आर्थिक लाभ का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का साधन भी है। स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, वित्तीय समावेशन और पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में भारतीय स्टार्टअप्स महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने सुधारों की प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत में परिवर्तन की गति रुकने वाली नहीं है। उन्होंने कहा कि सरकार लगातार ऐसी नीतियां बना रही है जो निवेश, उद्योग और नवाचार को प्रोत्साहित करें। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि "रिफॉर्म एक्सप्रेस रुकने वाली नहीं है" और आने वाले वर्षों में भारत वैश्विक निवेश तथा तकनीकी विकास का प्रमुख केंद्र बनेगा। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाने, डिजिटल सेवाओं का विस्तार करने और नई तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए लगातार कदम उठाए जा रहे हैं।

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने भारत की उपलब्धियों की सराहना करते हुए कहा कि भारत आज केवल एक विशाल बाजार नहीं बल्कि वैश्विक नवाचार का केंद्र बन चुका है। उन्होंने कहा कि भारत की युवा आबादी, तकनीकी क्षमता और उद्यमशीलता की भावना विश्व अर्थव्यवस्था को नई दिशा देने की क्षमता रखती है। मैक्रों ने कहा कि भारत और फ्रांस के बीच संबंध केवल व्यापार और कूटनीति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि दोनों देश भविष्य की तकनीकों और मानवता के सामने मौजूद चुनौतियों के समाधान के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि फ्रांस लंबे समय से 'मेक इन इंडिया' का समर्थक रहा है और दोनों देशों की साझेदारी लगातार मजबूत हो रही है।

कार्यक्रम के दौरान कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जलवायु परिवर्तन और स्वच्छ ऊर्जा जैसे विषयों पर विशेष चर्चा हुई। मैक्रों ने कहा कि भविष्य की चुनौतियों का सामना केवल वैश्विक सहयोग के माध्यम से किया जा सकता है और भारत-फ्रांस साझेदारी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उन्होंने विशेष रूप से एआई आधारित तकनीकों, हरित ऊर्जा समाधानों और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए संयुक्त अनुसंधान पर बल दिया। कार्यक्रम में परमाणु ऊर्जा सहयोग भी चर्चा का प्रमुख विषय रहा। मैक्रों ने कहा कि दोनों देश 'स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर' जैसी आधुनिक परमाणु तकनीकों पर सहयोग की संभावनाओं का अध्ययन कर रहे हैं, जो स्वच्छ और टिकाऊ ऊर्जा उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत और फ्रांस के संबंध साझा मूल्यों, आपसी विश्वास और दीर्घकालिक सहयोग पर आधारित हैं। उन्होंने कहा कि दोनों देशों ने विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, अंतरिक्ष, रक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है और आने वाले समय में यह सहयोग और व्यापक होगा। उन्होंने कहा कि नवाचार केवल आर्थिक विकास का माध्यम नहीं बल्कि मानवता के बेहतर भविष्य की कुंजी है और भारत इसी सोच के साथ आगे बढ़ रहा है।

14 से 16 जून तक चलने वाले 'भारत इनोवेट्स 2026' कार्यक्रम में दुनिया भर के स्टार्टअप्स, निवेशकों, तकनीकी विशेषज्ञों और वेंचर कैपिटल फंडों की भागीदारी हो रही है। इस आयोजन का उद्देश्य वैश्विक स्तर पर तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देना, निवेश आकर्षित करना और नवाचार आधारित साझेदारियों के नए अवसर पैदा करना है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस कार्यक्रम से भारत और फ्रांस के बीच आर्थिक तथा तकनीकी संबंधों को नई गति मिलेगी और दोनों देश भविष्य की तकनीकी दुनिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए और अधिक मजबूती से आगे बढ़ेंगे। भारत की बढ़ती तकनीकी क्षमता और वैश्विक स्तर पर उसके बढ़ते प्रभाव को देखते हुए यह आयोजन केवल एक सम्मेलन नहीं बल्कि उस बदलते भारत का प्रतीक बन गया है, जो अब दुनिया के लिए केवल एक बाजार नहीं बल्कि समाधान और नवाचार का केंद्र बनकर उभर रहा है।

संपादकीय

सस्ताई की अंतिम लड़ाई

महंगाई आजकल ऐसी शख्सियत बन चुकी है कि जहां भी जाइए, वही चर्चा का विषय मिलती है। सुबह अखबार खोलिए तो महंगाई, टीवी देखिए तो महंगाई, सोशल मीडिया पर जाइए तो महंगाई और अगर गलती से किसी रिश्तेदार के घर चले जाइए तो वहां भी महंगाई ही आपका स्वागत करती मिलेगी। ऐसा लगता है मानो महंगाई ने पूरे देश में अपना जनसंपर्क अभियान चला रखा हो। लेकिन इस सारे शोर-शराबे के बीच एक पात्र ऐसा भी है जो पूरी ईमानदारी के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। उसका नाम है—सस्ताई। बेचारी सस्ताई की समस्या यह है कि वह कभी अपने लिए प्रचार नहीं करती। वह चुपचाप अपना काम करती रहती है। महंगाई जहां मंच पर चढ़कर भाषण देती है, वहीं सस्ताई कोने में बैठकर मुस्कुराती रहती है। लेकिन अगर ध्यान से देखा जाए तो आज भी देश में सस्ताई के ऐसे-ऐसे नमूने मौजूद हैं कि अर्थशास्त्र की किताबें भी शर्मा जाएं। राजनीति की दुनिया को ही ले लीजिए। वर्षों से हमें बताया जा रहा है कि चुनाव अब इतने महंगे हो चुके हैं कि आम आदमी उनके बारे में सोच भी नहीं सकता। चुनाव लड़ना तो दूर, चुनावी पोस्टर देखने भर का खर्च भी भारी पड़ सकता है। लेकिन इसी माहौल में कभी-कभी ऐसा दृश्य सामने आ जाता है कि पूरा गणित गड़बड़ा जाता है। कोई नेता सड़क किनारे खड़े होकर मामूली नाश्ता कर लेता है और वह राष्ट्रीय बहस का विषय बन जाता है। इससे सस्ताई को नया जीवन मिल जाता है। वह गर्व से कहती है कि देखो, अभी भी कम खर्च में बड़ा संदेश दिया जा सकता है। पार्टियां बनाने का मामला भी कम दिलचस्प नहीं है। विशेषज्ञ बताते हैं कि राजनीतिक दल खड़ा करने के लिए करोड़ों रुपये, हजारों कार्यकर्ता और वर्षों की मेहनत चाहिए। लेकिन हमारे लोकतंत्र की खूबी यह है कि कभी-कभी कुछ लोग चाय पीते-पीते नई पार्टी बनाने का फैसला कर लेते हैं। अगले दिन प्रेस कॉन्फ्रेंस होती है और नई पार्टी का जन्म हो जाता है। यह दृश्य देखकर सस्ताई खुशी से झूम उठती है। उसे लगता है कि जब राजनीतिक दल भी बिना भारी-भरकम निवेश के बन सकते हैं तो फिर उसकी उपयोगिता पर सवाल क्यों उठाए जाते हैं।

उधर नेताओं की कीमत को लेकर भी तरह-तरह की चर्चाएं होती रहती हैं। राजनीतिक विश्लेषक ऐसे आंकड़े बताते हैं कि सुनकर आम आदमी को लगे जैसे शेयर बाजार का भाव चल रहा हो। लेकिन समय-समय पर ऐसे उदाहरण भी सामने आते हैं जहां राजनीतिक निष्ठाएं इतनी सस्ती साबित होती हैं कि पूरा बाजार तंत्र हैरान रह जाता है। सस्ताई ऐसे मौकों पर अपनी पीठ खुद थपथपाती है और कहती है कि अभी उसका दौर पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी उसका दबदबा कायम है। पहले देशों के बीच मित्रता बढ़ाने के लिए बड़े-बड़े भोज, महंगे उपहार और लंबी बैठकों का सहारा लिया जाता था। अब कभी-कभी एक छोटी-सी भेंट, एक साधारण मुस्कान या एक मामूली प्रतीकात्मक उपहार भी सुर्खियां बटोर लेता है। इससे सस्ताई को नया आत्मविश्वास मिलता है। उसे लगता है कि जब दुनिया की बड़ी-बड़ी समस्याओं पर बातचीत एक कप चाय या एक टॉफी के सहारे हो सकती है तो फिर वह अभी भी प्रासंगिक है। समाज के दूसरे क्षेत्रों में भी सस्ताई अपनी मौजूदगी दर्ज कराती रहती है। शिक्षा जगत में लोग एक-दूसरे की योग्यता का मूल्यांकन ऐसे करते हैं मानो कोई पुरानी वस्तुओं का बाजार लगा हो। कोई किसी को कौड़ी का बताता है तो कोई फूटी कौड़ी का। मजेदार बात यह है कि यही लोग बाद में करोड़ों रुपये की मानहानि का दावा भी कर देते हैं। यानी शब्दों में सस्ताई और दावों में महंगाई का अनोखा संतुलन बना रहता है। सोशल मीडिया ने भी सस्ताई को नई ताकत दी है। पहले प्रचार के लिए बड़े-बड़े विज्ञापन देने पड़ते थे, अब एक वायरल पोस्ट ही काफी होती है। पहले प्रतिष्ठा बनाने में वर्षों लगते थे, अब कुछ सेकंड का वीडियो रातों-रात किसी को प्रसिद्ध बना सकता है। यह डिजिटल युग की सबसे बड़ी सस्ताई है, जहां निवेश कम और चर्चा ज्यादा होती है।

सच्चाई यह है कि महंगाई और सस्ताई दोनों हमारे समाज के स्थायी पात्र हैं। महंगाई हमेशा अपने बढ़ते कद का प्रदर्शन करती रहती है, जबकि सस्ताई छोटे-छोटे उदाहरणों के सहारे जीवित रहती है। दोनों की यह प्रतिस्पर्धा कभी समाप्त नहीं होगी। फर्क सिर्फ इतना है कि महंगाई का शोर ज्यादा सुनाई देता है और सस्ताई की मुस्कान कम दिखाई देती है।

राष्ट्र निर्माण की अदृश्य आधारशिला का मूल्यांकन

> यदि किसी परिवार की आय उसके आर्थिक आधार को सुदृढ़ करती है, तो घर के भीतर किया जाने वाला श्रम उस आधार को स्थायित्व प्रदान करता है। दोनों में से किसी एक के अभाव में परिवार की संरचना पूर्ण नहीं हो सकती। इसलिए घरेलू श्रम को केवल एक पारिवारिक दायित्व मानना उसके वास्तविक महत्व को कम करके आंकना होगा।

हाल ही में देश की सर्वोच्च अदालत ने 'शिशुपाल उर्फ शिशराम एवं अन्य बनाम सुरजीत एवं अन्य' मामले में एक महत्वपूर्ण निर्णय देते हुए भारतीय समाज के समक्ष उपस्थित एक ऐसे प्रश्न को पुनः केंद्र में ला खड़ा किया है, जिस पर लंबे समय से पर्याप्त गंभीरता से विचार नहीं किया गया। न्यायालय ने गृहिणियों को 'राष्ट्र निर्माता' की संज्ञा देते हुए कहा कि उनके द्वारा किया जाने वाला घरेलू श्रम केवल परिवार के संचालन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

न्यायालय ने निर्देश देते हुए कहा कि 'जब कोई मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण, उच्च न्यायालय अथवा यह न्यायालय किसी ऐसे मामले पर विचार कर रहा हो, जिसमें एक गृहिणी की मृत्यु हुई हो, तब मुआवजे की गणना में गृहिणियों के साथ होने वाली उस अंतर्निहित असमानता को दूर करने के लिए, जो उनकी अनुमानित आय के अत्यंत रूढ़िवादी आकलन के कारण उत्पन्न होती है, 'घरेलू देखभाल की हानि' के अंतर्गत 30,000 रुपये प्रतिमाह की एक समेकित राशि जोड़ी जानी चाहिए।' न्यायालय ने यह भी निर्देश दिया कि इस राशि में प्रत्येक तीन वर्ष के अंतराल पर संचयी रूप से 10 प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी।

प्रथम दृष्टया यह निर्णय मोटर दुर्घटना मुआवजा दावों में क्षतिपूर्ति निर्धारण से संबंधित एक सामान्य न्यायिक आदेश प्रतीत हो सकता है, किन्तु वास्तव में इसका महत्व इससे कहीं अधिक व्यापक है। यह निर्णय केवल 30,000 रुपये प्रतिमाह की राशि निर्धारित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उस दृष्टिकोण में परिवर्तन का प्रतीक है, जिसके माध्यम से सर्वोच्च न्यायालय ने घरेलू श्रम के सामाजिक और आर्थिक मूल्य को स्वीकार किया है। लंबे समय तक भारतीय समाज में घर के भीतर किए जाने वाले कार्यों को प्रेम, कर्तव्य और पारिवारिक दायित्व के रूप में देखा जाता रहा, जबकि उनके आर्थिक महत्व पर अपेक्षित गंभीरता से विचार नहीं किया गया।

निःसंदेह, किसी भी परिवार का सुचारु संचालन केवल आर्थिक आय पर निर्भर नहीं करता। भोजन की व्यवस्था, बच्चों का पालन-पोषण, वृद्धजनों की देखभाल, परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं का समन्वय, घर का प्रबंधन तथा भावनात्मक संतुलन बनाए रखने जैसे असंख्य कार्य प्रतिदिन किए जाते हैं, जिनके लिए कोई वेतन निर्धारित नहीं होता। विडंबना यह है कि जिन कार्यों के बिना परिवार की संरचना की कल्पना भी नहीं की जा सकती, वही कार्य लंबे समय तक आर्थिक मूल्यांकन की प्रक्रिया से बाहर रहे। उक्त निर्णय में सर्वोच्च न्यायालय ने आगे कहा कि 'यह विडंबनापूर्ण है कि गृहिणी को परिवार के कमाने वाले सदस्यों पर आश्रित बताया जाता है, जबकि वास्तविकता यह है कि परिवार की पूरी व्यवस्था और सुचारु संचालन काफी हद तक गृहिणी पर ही निर्भर करता है।'

वास्तव में यह टिप्पणी भारतीय समाज में लंबे समय से प्रचलित उस धारणा को चुनौती देती है, जिसके अनुसार आर्थिक आय अर्जित करने वाला व्यक्ति ही परिवार का मुख्य योगदानकर्ता माना जाता है। यदि किसी परिवार की आय उसके आर्थिक आधार को सुदृढ़ करती है, तो घर के भीतर किया जाने वाला श्रम उस आधार को स्थायित्व प्रदान करता है। दोनों में से किसी एक के अभाव में परिवार की संरचना पूर्ण नहीं हो सकती। इसलिए घरेलू श्रम को केवल एक पारिवारिक दायित्व मानना उसके वास्तविक महत्व को कम करके आंकना होगा। न्यायालय ने अपने निर्णय में यह भी रेखांकित किया कि 'गृहिणियों का योगदान केवल बच्चों के जन्म और पालन-पोषण तक सीमित नहीं है। वे उस मानव पूंजी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिस पर किसी भी राष्ट्र की सामाजिक और आर्थिक प्रगति आधारित होती है।' यह निर्विवादित है कि किसी भी समाज का भविष्य केवल उसके उद्योगों, संस्थानों अथवा आर्थिक नीतियों से निर्मित नहीं होता, बल्कि उन मानवीय मूल्यों, संस्कारों और क्षमताओं से भी निर्मित होता है, जिनका विकास परिवार के भीतर होता है। वर्तमान निर्णय का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि सर्वोच्च न्यायालय ने क्षतिपूर्ति निर्धारण के संबंध में विकसित हो रहे न्यायशास्त्र को भी आगे बढ़ाया है। इस संदर्भ में न्यायालय ने 'नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड बनाम प्रणय सेठी एवं अन्य' के ऐतिहासिक निर्णय का उल्लेख किया, जिसमें क्षतिपूर्ति निर्धारण के लिए कुछ पारंपरिक मदों, जैसे संपत्ति की हानि, साहचर्य की हानि तथा अंत्येष्टि व्यय को मान्यता प्रदान की गई थी। 'शिशुपाल उर्फ शिशराम एवं अन्य बनाम सुरजीत एवं अन्य' मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने इस न्यायिक दृष्टिकोण का विस्तार करते हुए 'घरेलू देखभाल की हानि' को भी एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में स्वीकार किया है। यह परिवर्तन केवल विधिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत अर्थपूर्ण है। किसी गृहिणी की मृत्यु के पश्चात परिवार को केवल भावनात्मक आघात ही नहीं पहुंचता, बल्कि वर्षों से संचालित हो रही देखभाल, मार्गदर्शन, संरक्षण और घरेलू प्रबंधन की वह व्यवस्था भी प्रभावित होती है, जिसका कोई प्रत्यक्ष आर्थिक मूल्य निर्धारित नहीं किया जाता। न्यायालय ने वस्तुतः इसी अदृश्य हानि को पहचानने और उसका न्यायसंगत मूल्यांकन करने का प्रयास किया है।

इस निर्णय का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष वह व्यापक आर्थिक दृष्टिकोण है, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने अपनाया है। न्यायालय ने स्वीकार किया कि महिलाओं द्वारा किए जाने वाले अवैतनिक घरेलू एवं देखभाल संबंधी कार्य का आर्थिक मूल्य भारत की सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 15 से 17 प्रतिशत के समतुल्य आंका गया है। इसके बावजूद यह श्रम न तो औपचारिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा माना जाता है और न ही उसे वह सामाजिक तथा आर्थिक मान्यता प्राप्त होती है, जिसका वह वास्तविक रूप से अधिकारी है। वस्तुतः यह स्थिति भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज के उस महत्वपूर्ण योगदान की ओर ध्यान आकर्षित करती है, जो प्रतिदिन किया तो जाता है, किंतु प्रायः औपचारिक गणनाओं और नीतिगत विमर्श में पर्याप्त स्थान नहीं पाता।

निश्चय ही यह निर्णय उस व्यापक सामाजिक परिवर्तन की ओर भी संकेत करता है, जिसमें पारिवारिक भूमिकाओं को पारंपरिक रूढ़ धारणाओं से परे जाकर समझने की आवश्यकता है। बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश में घर तथा परिवार की देखभाल का दायित्व केवल महिलाओं तक सीमित नहीं रह गया है। आज अनेक परिवारों में पुरुष भी बच्चों के पालन-पोषण, घरेलू प्रबंधन तथा परिवार की दैनिक आवश्यकताओं के निर्वहन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

ऐसी स्थिति में 'होम मेकर' की अवधारणा को केवल किसी एक लिंग से जोड़कर देखना न तो सामाजिक यथार्थ के अनुरूप है और न ही न्याय के व्यापक सिद्धांतों के। घरेलू श्रम का मूल्य उसके स्वरूप और योगदान में निहित है, न कि उसे करने वाले व्यक्ति के लिंग में। संभवतः यही कारण है कि सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में 'गृहिणी' के प्रश्न पर विचार करते हुए भी घरेलू देखभाल और पारिवारिक उत्तरदायित्वों के महत्व को अधिक व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया है।

निस्संदेह किसी गृहिणी के योगदान का पूर्ण मूल्यांकन किसी धनराशि में नहीं किया जा सकता। तथापि यह निर्णय इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम अवश्य है कि घर की चारदीवारी के भीतर किया जाने वाला श्रम भी उतना ही सम्मान और मान्यता प्राप्त करे, जितना समाज में दिखाई देने वाला अन्य कोई कार्य। न्यायालय का यह निर्णय केवल क्षतिपूर्ति निर्धारण का एक नया मानदंड नहीं, बल्कि घरेलू श्रम की गरिमा और उसके सामाजिक महत्व की औपचारिक स्वीकृति के रूप में भी स्मरण किया जाएगा।

प्रेरणा

जब सपनों की कीमत जंगल ने चुकाई

सुबह की पहली किरणें धरती पर उतर रही थीं। ओस की बूंदें घास के पत्तों पर मोतियों की तरह चमक रही थीं। दूर-दूर तक फैली हरियाली पर सुनहरी धूप का हल्का आवरण पड़ चुका था। वातावरण में एक अद्भुत शांति थी, जिसे केवल पक्षियों का मधुर कलरव तोड़ रहा था। फार्महाउस की कच्ची पगडंडी पर चलते हुए राघव अपने दस वर्षीय पुत्र आरव का हाथ थामे प्रकृति के इस सौंदर्य को निहार रहा था।

आरव बार-बार इधर-उधर देख रहा था। उसे यह जगह बहुत पसंद थी। यहां शहर की तरह हॉर्न नहीं बजते थे, धुआं नहीं था और न ही भागदौड़ थी। हवा में मिट्टी की खुशबू थी और पेड़ों की शाखाओं पर बैठे पक्षी किसी अनदेखे उत्सव का गीत गा रहे थे।

राघव की आंखों में भी इस स्थान से जुड़ी अनेक स्मृतियां थीं। वर्षों पहले जब उसने यह जमीन खरीदी थी तब यहां घना वन था। विशाल बरगद, पीपल और नीम के वृक्ष इस क्षेत्र की पहचान थे। गर्मियों में उनकी छाया धरती को ठंडक देती थी और वर्षा के दिनों में पूरा इलाका किसी स्वर्ग जैसा प्रतीत होता था। बचपन में वह अपने दोस्तों के साथ इन्हीं जंगलों में घंटों खेला करता था। पेड़ों पर चढ़ना, पक्षियों के घोंसले देखना और पत्तों की सरसराहट सुनना उसके जीवन का हिस्सा था।

समय बदला और धीरे-धीरे जंगल सिकुड़ते चले गए। जहां कभी हरियाली थी वहां अब बहुमंजिला इमारतें खड़ी थीं। खेतों की जगह कॉलोनियां बन गई थीं। राघव जब भी इस परिवर्तन को देखता, उसके मन में एक अजीब-सी उदासी भर जाती।

इसी बीच आरव ने अचानक पूछा, "पापा, त्याग किसे कहते हैं?"

राघव मुस्कराया।

"जब कोई व्यक्ति किसी बड़े उद्देश्य के लिए अपनी प्रिय चीज छोड़ देता है, उसे त्याग कहते हैं।"

"जैसे?"

"जैसे सैनिक देश की रक्षा के लिए अपना जीवन दांव पर लगा देते हैं। माता-पिता अपने बच्चों के भविष्य के लिए बहुत कुछ छोड़ देते हैं। यही त्याग है।"

आरव कुछ देर सोचता रहा।

फिर उसने दूसरा प्रश्न किया।

"और बलिदान क्या होता है?"

राघव कुछ क्षण के लिए रुका।

"जब किसी बड़ी इच्छा या उद्देश्य के लिए कुछ महत्वपूर्ण खो दिया जाए, उसे बलिदान कह सकते हैं।"

इतने में अचानक मशीनों की तेज आवाज ने वातावरण की शांति भंग कर दी। कुछ दूरी पर भारी मशीनें चल रही थीं। आरव ने उत्सुकता से उधर देखा।

कई मजदूर एक बड़े भूखंड पर काम कर रहे थे। विशाल पेड़ों के तनों पर मशीनें चल रही थीं। एक के बाद एक वृक्ष धराशायी हो रहे थे। वहां खड़े थे अग्रवाल साहब, जिनके चेहरे पर सफलता की चमक साफ दिखाई दे रही थी।

उन्होंने वर्षों की कानूनी प्रक्रिया और संघर्ष के बाद इस भूमि का स्वामित्व प्राप्त किया था। अब यहां एक आलीशान टाउनशिप बनने वाली थी।

"पापा, ये लोग पेड़ क्यों काट रहे हैं?" आरव ने पूछा।

"क्योंकि यहां बड़ी इमारतें बनेंगी," राघव ने उत्तर दिया।

उसी समय एक विशाल वृक्ष जोरदार आवाज के साथ धरती पर गिर पड़ा। उसकी शाखाओं से कई घोंसले नीचे आ गिरे। कुछ अंडे टूट गए। घबराए हुए पक्षी आसमान में इधर-उधर उड़ने लगे।

आरव की आंखों में आश्चर्य और दुख एक साथ भर गए।

"पापा, आपने कहा था कि लोग अपनी इच्छा पूरी होने पर बलि देते हैं। क्या ये अंकल भी अपनी इच्छा पूरी करने के लिए इन पेड़ों की बलि दे रहे हैं?"

राघव के पास उस मासूम प्रश्न का तत्काल कोई उत्तर नहीं था।

उसने केवल आरव की ओर देखा।

बच्चे के सरल प्रश्न में एक गहरी सच्चाई छिपी थी।

दोनों धीरे-धीरे अग्रवाल साहब के पास पहुंचे।

आरव ने मासूमियत से कहा, "अंकल, अब तो यहां चिड़ियां नहीं रहेंगी। आपकी गाड़ियां भी गंदी नहीं होंगी।"

उसके शब्द सुनकर अग्रवाल साहब का चेहरा बदल गया।

अचानक उनके मन में अपना बचपन तैर उठा।

उन्हें याद आया कि कैसे वे गांव में पेड़ों के नीचे खेलते थे। कैसे आम और जामुन तोड़कर खाते थे। कैसे गर्म दोपहरों में वृक्षों की छाया उन्हें राहत देती थी। उन्हें याद आया कि उनकी मां गर्मियों में पेड़ के नीचे चारपाई डालकर उन्हें कहानियां सुनाया करती थीं।

वह सब कुछ जैसे एक क्षण में उनकी आंखों के सामने जीवित हो उठा।

लेकिन दूसरी ओर वर्षों का सपना भी था।

उन्होंने इस परियोजना के लिए बहुत संघर्ष किया था। कागजी कार्रवाई, अदालतों के चक्कर, निवेश और योजनाएं—सब कुछ इसी दिन के लिए था।

उनके भीतर एक विचित्र संघर्ष शुरू हो गया।

एक ओर सपना था, दूसरी ओर प्रकृति।

एक ओर महत्वाकांक्षा थी, दूसरी ओर संवेदना।

तभी एक मजदूर की आवाज आई—

"साहब, अगला पेड़ भी काटना है।"

अग्रवाल साहब ने चुपचाप सिर हिला दिया।

मशीन फिर गरज उठी।

कुछ ही घंटों में दर्जनों पेड़ धरती पर पड़े थे। जो स्थान सुबह तक जीवन से भरा हुआ था, वह अब वीरान लग रहा था। पक्षियों की चहचहाहट की जगह मशीनों का शोर था। हरियाली की जगह धूल उड़ रही थी।

शाम तक पूरा क्षेत्र किसी युद्धभूमि जैसा दिखाई देने लगा। कटे हुए तनों के ढेर ऐसे लग रहे थे मानो किसी ने प्रकृति के शरीर को टुकड़ों में बांट दिया हो।

आरव काफी देर तक चुप रहा।

फिर उसने धीरे से पूछा—

"पापा, जब मैं बड़ा हो जाऊंगा तब क्या यहां भी पेड़ होंगे?"

राघव के कदम ठिठक गए।

यह प्रश्न केवल एक बच्चे का प्रश्न नहीं था।

यह आने वाले समय का प्रश्न था।

वह समय जब बच्चों को किताबों में जंगल दिखाए जाएंगे, लेकिन वास्तविक जंगल शायद कहीं नहीं बचेंगे।

वह समय जब पक्षियों की आवाजें मोबाइल की रिंगटोन में सुनाई देंगी, लेकिन खिड़की के बाहर नहीं।

वह समय जब लोग ऑक्सीजन खरीदेंगे, लेकिन वृक्ष लगाने के लिए जमीन नहीं बचेगी।

राघव ने कोई उत्तर नहीं दिया।

उसकी नजरें कटे हुए वृक्षों पर टिक गईं।

अग्रवाल साहब भी मौन खड़े थे।

उन्होंने अपना सपना तो हासिल कर लिया था, लेकिन उस सपने की कीमत अब उन्हें दिखाई देने लगी थी।

धरती पर पड़े वृक्षों के तने जैसे उनसे प्रश्न कर रहे थे कि विकास और विनाश के बीच की रेखा आखिर कहां है।

आसमान में एक अकेली चिड़िया लंबे समय तक मंडराती रही।

सत्ता के विस्तार की भाजपाई रणनीति

सरकारों द्वारा अपने 100 दिन का भी जश्न जोर-शोर से मनाने के दौर में नरेन्द्र मोदी सरकार का 13वें वर्ष में प्रवेश बड़ी उपलब्धि है। लोकसभा में मात्र दो सीटों से शुरुआत करने वाली भाजपा के लिए यह ऐतिहासिक उपलब्धि भी है कि केंद्र में लगातार तीसरी बार उसकी सरकार होने के साथ ही 22 राज्यों में भी उसकी या उसके नेतृत्व वाले राजग की सत्ता है।

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में साढ़े चार दशक में सत्ता का ऐसा सफर किसी भी राजनीतिक दल के लिए प्रेरक हो सकता है और लक्ष्य भी। भाजपा के पूर्ववर्ती जनसंघ को सीमित सत्ता-सफलताएं गैर कांग्रेसी दलों से गठबंधन में ही मिलीं। हालांकि 1980 में जनसंघ ने भाजपा के रूप में अपनी पृथक वैचारिक पहचान की राह पर लौटने का फैसला किया।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद कांग्रेस के लिए उपजी सहानुभूति लहर में हुए 1984 के अपने पहले ही चुनाव में भाजपा मात्र दो लोकसभा सीटों पर सिमट गई थी। अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी जैसे दिग्गजों के नेतृत्व में भी भाजपा को राजनीतिक स्वीकार्यता और लोकप्रियता बढ़ाने के लिए संघर्ष करना पड़ा।

बोफोर्स तोप सौदे में दलाली के आरोपों की पृष्ठभूमि में कांग्रेस विरोधी माहौल में हुए 1989 के लोकसभा चुनाव से केंद्र में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार सत्तारूढ़ होने में वाम मोर्चा और भाजपा दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। राष्ट्रीय मोर्चा के मुख्य घटक जनता दल में विश्वनाथ प्रताप सिंह-देवीलाल और चंद्रशेखर के बीच सत्ता संघर्ष से ही मंडल-कमंडल के बीच राजनीतिक ध्रुवीकरण हुआ, जिससे कांग्रेस कमजोर होती गई और भाजपा मजबूत।

कांग्रेस की कमजोरी उसकी संगठनात्मक निष्क्रियता का भी परिणाम रही, जबकि भाजपा ने लगातार कड़ी मेहनत से 'मंडल' को भी 'कमंडल' में समाहित करते हुए जनाधार का विस्तार किया। 1991 में चुनाव प्रचार के दौरान राजीव गांधी की हत्या से उपजी सहानुभूति की लहर से कांग्रेस पीवी नरसिंह राव के नेतृत्व में केंद्र में अल्पमत सरकार बनाने में तो सफल हो गई, लेकिन पहली बार 120 सीटों के साथ भाजपा मुख्य विपक्षी दल बन गई।

राव सरकार की विदाई के बाद 1996 में 161 सीटों के साथ लोकसभा में सबसे बड़े दल के रूप में उभरी भाजपा पहली बार केंद्र में सरकार बनाने में सफल हुई, लेकिन विश्वासमत हासिल करने से पहले ही 13वें दिन वाजपेयी ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। सबसे बड़े दल के विरुद्ध राजनीतिक गोलबंदी से बनी कांग्रेस की कठपुतली गठबंधन सरकारों को मतदाताओं ने जनादेश का अपमान माना और 1998 में भाजपा को 182 सीटों के साथ फिर सबसे बड़ा दल बना दिया।

इस बीच भाजपा ने अन्य दलों के साथ रिश्ते बनाते हुए राजग का भी विस्तार किया, लेकिन शह-मात के खेल में सरकार साल भर ही चल पाई। बहुचर्चित कारगिल प्रकरण के बावजूद 1999 में भाजपा की सीटें आश्चर्यजनक रूप से न बढ़ीं, न घटीं, लेकिन 'शाइनिंग इंडिया' की आत्ममुग्धता का शिकार होकर समय पूर्व लोकसभा चुनाव कराने से पहले वाजपेयी सरकार स्थिर ही नजर आ रही थी।

वाजपेयी सरीखे विराट राजनेता को राजनीति में 'नौसिखिया' बताई जा रहीं सोनिया गांधी ने गठबंधन की बिसात से 2004 के लोकसभा चुनाव में मात दे कर देश-दुनिया को चौंका दिया। खुद प्रधानमंत्री बनने के बजाय सोनिया ने मनमोहन सिंह को चुना, जिनके नेतृत्व में 2009 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस 1984 के बाद पहली बार 200 सीटों का आंकड़ा भी पार कर गई, जबकि भाजपा 138 से फिसलते हुए 116 पर जा पहुंची।

मनमोहन सरकार के पतन के बाद मोदी के नेतृत्व में चार दशक बाद पहली बार किसी दल को अपने दम पर पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ और उसके बाद देश के राजनीतिक इतिहास ने एक नई करवट ली। भाजपा ने राजनीतिक रूप से अनुर्वर समझे जाने वाले राज्यों में भी अपनी सत्ता का जैसा विस्तार किया है, वह अप्रत्याशित ही कहा जाएगा। मोदी के 'कांग्रेसमुक्त भारत' के नारे की अब भी चर्चा हो ही जाती है, लेकिन भाजपा के अभूतपूर्व विस्तार में विपरीत विचारधारा वाले अन्य दलों से आए नेताओं की भी एक बड़ी भूमिका रही है, जिनमें सबसे ज्यादा संख्या कांग्रेसियों की ही है।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे भाजपा में शामिल हुए कांग्रेस नेताओं का अक्सर उल्लेख करते हैं। बेशक भाजपा ने कांग्रेस, खासकर नेहरू परिवार की छवि को कमजोर कर सकने वाले हर कांग्रेसी के लिए अपने दरवाजे खोले, लेकिन खुद को मजबूत बनाने वाले कांग्रेसियों पर विशेष फोकस भी किया। परंपरागत भाजपाई एजेंडा से अप्रभावित रहे पूर्वोत्तर राज्यों में भी अगर आज भाजपा या राजग सरकारें हैं, तो उसमें उस रणनीतिक जोड़तोड़ की बड़ी भूमिका है।

भाजपा की इस दोहरी राजनीतिक रणनीति का सबसे बड़ा उदाहरण हिमंत बिस्वा सरमा हैं, जिन्होंने असम गण परिषद से राजनीति शुरू की और फिर कांग्रेस सरकारों में भी मंत्री रहे। गोगोई परिवार के प्रति मोह के चलते राहुल गांधी द्वारा भाव न दिए जाने पर हिमंत ने 2015 में कांग्रेस छोड़ी। लगभग पूरे पूर्वोत्तर में भाजपाई सत्ता का विस्तार करवाने के बाद उन्हें 2021 में असम का मुख्यमंत्री बनाया गया, जिनके नेतृत्व में इस बार भाजपा ने 126 में से मात्र 89 सीटों पर लड़कर 82 सीटों के साथ अकेले दम बहुमत हासिल करने का करिश्मा कर दिखाया।

दरअसल अपने लिए अनुकूल अन्य दलों के ऐसे संभावनाशील नेताओं की लंबी सूची है, जिन पर दांव लगा कर भाजपा तीन-चौथाई भारत के सत्ता सिंहासन तक पहुंची है। 'कमल' थाम कर सत्ता सिंहासन तक पहुंचने वाले गैर-भाजपाई मूल के सबसे नए मुख्यमंत्री बंगाल में सुवेंदु अधिकारी हैं, जबकि बिहार के पहले भाजपाई मुख्यमंत्री बने सम्राट चौधरी की पृष्ठभूमि भी राजद और जदयू की है।

अभियान

देवताओं के दूत से जन-जन के प्रेरणास्रोत तक: नारद मुनि की अनंत यात्रा

भारतीय सभ्यता और सनातन संस्कृति का इतिहास जितना विशाल है, उतना ही अद्भुत उसके महान ऋषियों और मुनियों का योगदान भी है। इन दिव्य विभूतियों में एक नाम ऐसा है जो केवल धर्म और अध्यात्म तक सीमित नहीं है, बल्कि ज्ञान, संवाद, संगीत, नीति, भक्ति और लोककल्याण का पर्याय बन चुका है। यह नाम है देवर्षि नारद का। हाथों में वीणा, अधरों पर "नारायण-नारायण" का मधुर उच्चारण और समस्त ब्रह्मांड में निर्बाध विचरण करने की क्षमता रखने वाले नारद मुनि भारतीय पौराणिक परंपरा के सबसे प्रभावशाली पात्रों में गिने जाते हैं। हजारों वर्षों से उनकी कथाएं लोगों को प्रेरित करती आ रही हैं और आज भी उनका व्यक्तित्व उतना ही प्रासंगिक दिखाई देता है जितना प्राचीन काल में था।

नारद मुनि को ब्रह्मा जी का मानस पुत्र माना जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार उनकी उत्पत्ति किसी सामान्य जन्म प्रक्रिया से नहीं हुई थी, बल्कि वे ब्रह्मा जी की मानसिक शक्ति से प्रकट हुए थे। जन्म से ही उनमें विलक्षण बुद्धि, अद्भुत स्मरण शक्ति और आध्यात्मिक चेतना विद्यमान थी। उन्होंने सांसारिक सुखों को अपने जीवन का लक्ष्य नहीं बनाया, बल्कि संपूर्ण सृष्टि के कल्याण को अपना उद्देश्य माना। यही कारण है कि उनका जीवन केवल तपस्या या ध्यान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वे हर समय सक्रिय रहकर धर्म और सत्य की स्थापना के लिए कार्य करते रहे।

देवर्षि की उपाधि प्राप्त करना अत्यंत दुर्लभ माना जाता है। यह सम्मान केवल उन्हीं ऋषियों को मिलता है जिन्होंने अपने ज्ञान, तप और चरित्र के बल पर असाधारण ऊंचाइयां प्राप्त की हों। नारद मुनि इस उपाधि के पूर्ण अधिकारी थे। वे केवल एक महान ऋषि नहीं थे, बल्कि देवताओं और मनुष्यों के बीच संवाद का जीवंत सेतु भी थे। वे जहां भी जाते, वहां ज्ञान, विवेक और भक्ति का प्रकाश फैलाते। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे किसी एक स्थान या वर्ग तक सीमित नहीं थे। देवताओं से लेकर दानवों तक और राजाओं से लेकर साधारण लोगों तक, सभी के बीच उनका सम्मान था।

भगवान विष्णु के प्रति उनकी भक्ति की चर्चा समस्त पुराणों में मिलती है। नारद मुनि को विष्णु का परम भक्त माना जाता है। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण भगवान के नाम को समर्पित था। वे निरंतर "नारायण-नारायण" का जाप करते रहते थे। यह केवल मंत्रोच्चार नहीं था, बल्कि उनके जीवन का आधार था। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सच्ची भक्ति केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह जीवन के प्रत्येक कार्य में दिखाई देती है। उन्होंने अनगिनत लोगों को भक्ति मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी और उन्हें ईश्वर के प्रति समर्पण का महत्व समझाया।

नारद मुनि की पहचान एक महान संचारक के रूप में भी की जाती है। आधुनिक युग में जिस प्रकार पत्रकार, संवाददाता और संचार विशेषज्ञ समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उसी प्रकार नारद मुनि प्राचीन काल में तीनों लोकों के बीच संवाद स्थापित करते थे। वे स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में स्वतंत्र रूप से विचरण कर सकते थे। जहां कोई संकट उत्पन्न होता, वहां वे पहुंच जाते। जहां किसी को मार्गदर्शन की आवश्यकता होती, वहां वे उपस्थित हो जाते। यही कारण है कि उन्हें संसार का पहला पत्रकार भी कहा जाता है।

हालांकि कई कथाओं में उन्हें विवाद या घटनाओं का सूत्रधार बताया गया है, लेकिन उनके प्रत्येक कार्य के पीछे एक गहरा उद्देश्य छिपा होता था। वे कभी भी स्वार्थवश किसी घटना में हस्तक्षेप नहीं करते थे। उनका लक्ष्य हमेशा धर्म की स्थापना और सत्य को उजागर करना होता था। कई बार वे ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर देते थे जिससे छिपे हुए सत्य सामने आ जाते और अंततः धर्म की विजय होती। यही कारण है कि उनकी भूमिका को समझने के लिए केवल घटनाओं को नहीं, बल्कि उनके परिणामों को भी देखना आवश्यक है। संगीत के क्षेत्र में भी नारद मुनि का योगदान असाधारण माना जाता है। उनकी वीणा केवल एक वाद्य यंत्र नहीं थी, बल्कि आध्यात्मिक ऊर्जा का माध्यम थी। जब वे वीणा बजाते हुए भगवान का गुणगान करते थे, तो वातावरण भक्तिमय हो उठता था। भारतीय संगीत परंपरा में उन्हें संगीत का महान आचार्य माना जाता है। कई ग्रंथों में वर्णन मिलता है कि उन्होंने संगीत को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि ईश्वर से जुड़ने का मार्ग बताया। उनके अनुसार संगीत आत्मा को शुद्ध करने और मन को एकाग्र बनाने की शक्ति रखता है।

पौराणिक ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि नारद मुनि 64 विद्याओं में पारंगत थे। वे वेद, उपनिषद, दर्शन, ज्योतिष, राजनीति, संगीत, काव्य और अनेक शास्त्रों के ज्ञाता थे। उनकी विद्वत्ता इतनी व्यापक थी कि देवता भी उनसे परामर्श लेने में संकोच नहीं करते थे। वे जटिल विषयों को सरल भाषा में समझाने की अद्भुत क्षमता रखते थे। यही कारण था कि वे केवल विद्वानों के बीच ही नहीं, बल्कि सामान्य जनमानस के बीच भी अत्यंत लोकप्रिय थे।

रामायण में उनकी भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानी जाती है। महर्षि वाल्मीकि को भगवान राम की कथा सुनाने का श्रेय नारद मुनि को ही दिया जाता है। कहा जाता है कि वाल्मीकि के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि इस संसार में सबसे आदर्श पुरुष कौन है। तब नारद मुनि ने उन्हें भगवान राम के जीवन की कथा सुनाई। यही कथा आगे चलकर रामायण के रूप में संसार के सामने आई। यदि नारद मुनि यह प्रेरणा न देते, तो शायद विश्व साहित्य की यह अमूल्य धरोहर कभी अस्तित्व में नहीं आती।

भागवत पुराण में भी उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। भक्त प्रह्लाद, ध्रुव और अनेक महान भक्तों के जीवन में उन्होंने निर्णायक भूमिका निभाई। ध्रुव को भक्ति का मार्ग दिखाना हो या प्रह्लाद के भीतर भगवान विष्णु के प्रति अटूट श्रद्धा का बीज बोना, हर जगह नारद मुनि एक मार्गदर्शक के रूप में दिखाई देते हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सही समय पर दिया गया एक मार्गदर्शन किसी व्यक्ति के जीवन की दिशा बदल सकता है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार नारद मुनि 12 चिरंजीवियों में शामिल हैं। चिरंजीवी वे होते हैं जिन्हें विशेष वरदान के कारण युगों तक जीवित रहने का आशीर्वाद प्राप्त होता है। माना जाता है कि वे आज भी ब्रह्मांड में विचरण कर रहे हैं और धर्म, ज्ञान तथा भक्ति का संदेश फैला रहे हैं। यह विश्वास करोड़ों श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करता है और उन्हें यह एहसास कराता है कि दिव्य शक्तियां आज भी संसार में सक्रिय हैं।

नारद मुनि केवल धार्मिक पात्र नहीं हैं, बल्कि वे जीवन प्रबंधन के भी महान शिक्षक हैं। उनका जीवन हमें सिखाता है कि ज्ञान तभी सार्थक है जब उसका उपयोग समाज के कल्याण के लिए किया जाए। संवाद तभी उपयोगी है जब वह लोगों को जोड़ने का कार्य करे। भक्ति तभी पूर्ण है जब वह अहंकार को समाप्त कर विनम्रता का भाव उत्पन्न करे। और शक्ति तभी महान है जब उसका उपयोग दूसरों के हित में किया जाए।

आज जब दुनिया सूचना क्रांति के दौर से गुजर रही है, तब नारद मुनि का व्यक्तित्व और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। वे हमें बताते हैं कि सूचना केवल शक्ति नहीं, बल्कि जिम्मेदारी भी है। संवाद केवल बोलने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को सही दिशा देने का साधन है। ज्ञान केवल संग्रह करने की वस्तु नहीं, बल्कि बांटने योग्य प्रकाश है। यही कारण है कि हजारों वर्षों बाद भी देवर्षि नारद का नाम श्रद्धा और सम्मान के साथ लिया जाता है। वे भारतीय संस्कृति की उस महान परंपरा के प्रतिनिधि हैं जिसमें ज्ञान और भक्ति, विवेक और करुणा, संवाद और सत्य एक साथ चलते हैं। उनके जीवन की गूंज आज भी "नारायण-नारायण" के रूप में सुनाई देती है और आने वाली पीढ़ियों को यह संदेश देती है कि सच्चा ज्ञान वही है जो मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे।

PRGI NO. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 (2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

परीक्षार्थियों के लिए देवदूत बनी सूरत पुलिस समय से परीक्षा केंद्र पहुंचाकर बचाए सैकड़ों सपने

सूरत। किसी भी प्रतियोगी परीक्षा का दिन अभ्यर्थियों के लिए जीवन के सबसे महत्वपूर्ण दिनों में से एक होता है। वर्षों की मेहनत, परिवार की उम्मीदें और भविष्य के सपने उस एक परीक्षा से जुड़े होते हैं। ऐसे में यदि परीक्षा केंद्र गलत पड़ जाए, कॉल लेटर खो जाए या जरूरी दस्तावेज समय पर न मिलें, तो पूरा भविष्य संकट में पड़ सकता है। रविवार को आयोजित लोक रक्षक दल (एलआरडी) भर्ती परीक्षा के दौरान सूरत में ऐसे ही कई अभ्यर्थियों के सामने कठिन परिस्थितियां उत्पन्न हुईं, लेकिन इस बार उनके लिए पुलिस केवल कानून-व्यवस्था संभालने वाली संस्था नहीं, बल्कि एक संरक्षक, मार्गदर्शक और संकटमोचक बनकर सामने आई।

शहर के विभिन्न हिस्सों में परीक्षा के दौरान कई अभ्यर्थी गलत केंद्र पर पहुंच गए, कुछ के दस्तावेज गुम हो गए तो कुछ समय की कमी के कारण परीक्षा से वंचित होने की स्थिति में पहुंच गए थे। ऐसे समय में सूरत पुलिस ने असाधारण संवेदनशीलता और तत्परता दिखाते हुए न केवल उनकी समस्याओं का समाधान किया, बल्कि उन्हें समय पर सही परीक्षा केंद्र तक पहुंचाकर उनकी वर्षों की मेहनत को भी बचा लिया।

सबसे भावुक घटनाओं में से एक डिंडोली क्षेत्र में सामने आई। एक छात्रा वेदांता इंटरनेशनल स्कूल पहुंच गई थी, जबकि उसका वास्तविक परीक्षा केंद्र कामरेज रोड स्थित लसकाना क्षेत्र में था। दोनों स्थानों के बीच लगभग 18 किलोमीटर की दूरी थी और परीक्षा शुरू होने में बहुत कम समय बचा था। गलत केंद्र पर पहुंचने के बाद छात्रा घबरा गई और रोने लगी। उसकी स्थिति देखकर डिंडोली पुलिस ने तत्काल पहल की। पुलिस अधिकारियों ने समय की गंभीरता को समझते हुए सरकारी वाहन उपलब्ध कराया और विशेष व्यवस्था के साथ छात्रा को ट्रैफिक के बीच सुरक्षित एवं समय पर सही परीक्षा केंद्र तक पहुंचाया। यदि पुलिस कुछ मिनट भी देर करती तो छात्रा परीक्षा से वंचित हो सकती थी।

इसी तरह खटोदरा क्षेत्र में एक अन्य अभ्यर्थी का कॉल लेटर खो गया। रविवार होने के कारण अधिकांश फोटो कॉपी और कंप्यूटर केंद्र बंद थे। अभ्यर्थी को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। परीक्षा का समय निकला जा रहा था और उसके चेहरे पर चिंता साफ दिखाई दे रही थी। मामले की जानकारी मिलते ही खटोदरा पुलिस ने उसे पुलिस स्टेशन बुलाया। वहां पुलिसकर्मियों ने स्वयं ऑनलाइन प्रक्रिया पूरी कर नया कॉल लेटर डाउनलोड कराया, उसका प्रिंट निकाला और फिर उसे परीक्षा केंद्र तक पहुंचाने की भी व्यवस्था की। इस त्वरित कार्रवाई ने एक युवा के सपनों को टूटने से बचा लिया।

रांदेर क्षेत्र में भी एक छात्रा गलत परीक्षा केंद्र पर पहुंच गई थी। वह एम.एम. मुल्ला एंड एम.ए. नाना गर्ल्स हाई स्कूल पहुंची थी, जबकि उसका वास्तविक केंद्र गोराट स्थित एम.ए. गर्ल्स सेकेंडरी स्कूल था।

समय कम था और दूरी भी काफी थी। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए पुलिस कंट्रोल रूम की टीम सक्रिय हुई और छात्रा को तुरंत वाहन में बैठाकर सही परीक्षा केंद्र तक पहुंचाया। पुलिस की तत्परता के कारण वह निर्धारित समय के भीतर परीक्षा कक्ष तक पहुंच सकी।

पाल थाना क्षेत्र में भी एक परीक्षार्थी परेशानी में फंस गया। रास्ते में उसका कॉल लेटर कहीं गिर गया था। परीक्षा केंद्र पहुंचने पर जब उसे इसकी जानकारी हुई तो वह घबरा गया। पुलिस को सूचना मिलने पर उसे पाल पुलिस स्टेशन लाया गया। वहां अधिकारियों ने उसके मोबाइल के माध्यम से कॉल लेटर की डिजिटल प्रति प्राप्त की और आवश्यक प्रक्रिया पूरी कराई। इसके बाद सरकारी वाहन से उसे परीक्षा केंद्र तक पहुंचाया गया। इस सहायता ने उसे परीक्षा देने का अवसर प्रदान किया।

सबसे बड़ी चुनौती अश्विनी कुमार पुलिस स्टेशन क्षेत्र में सामने आई। यहां बड़ी संख्या में अभ्यर्थी पी.पी. सवाणी विद्या भवन, हीराबाग पहुंच गए थे, जबकि उनका वास्तविक परीक्षा केंद्र पी.पी. सवाणी विद्यालय, उमरा था। दोनों स्थानों के बीच लगभग 15 किलोमीटर की दूरी थी। यदि समय पर कदम नहीं उठाया जाता तो दर्जनों अभ्यर्थी परीक्षा से वंचित हो सकते थे। पुलिस ने तत्काल स्थिति का आकलन किया और वाहनों की व्यवस्था कर लगभग 60 अभ्यर्थियों को सामूहिक रूप से सही परीक्षा केंद्र तक पहुंचाया। पुलिस की इस कार्रवाई ने बड़ी संख्या में युवाओं का भविष्य बचाने का काम किया।

इस पूरे घटनाक्रम के दौरान एक और मार्मिक मामला सामने आया। नर्मदा जिले के डेडियापाड़ा की रहने वाली मोगराबेन वसावा परीक्षा देने सूरत आई थीं। यात्रा के दौरान उनका बैग बस में छूट गया, जिसमें कॉल लेटर सहित सभी आवश्यक दस्तावेज रखे हुए थे। परीक्षा केंद्र पहुंचने पर जब उन्हें अपने बैग के खो जाने का पता चला तो वह बेहद परेशान हो गईं और रोने लगीं। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। अधिकारियों ने उन्हें मानसिक रूप से संभाला, सांत्वना दी और सुरक्षित घर पहुंचने की व्यवस्था भी की। पुलिसकर्मियों ने उन्हें अडाजन बस डिपो तक पहुंचाया और राजपीपला जाने वाली बस में बैठाकर उनके सुरक्षित सफर को सुनिश्चित किया।

एलआरडी परीक्षा के दौरान सामने आए ये सभी घटनाक्रम यह दर्शाते हैं कि आधुनिक पुलिसिंग केवल अपराध नियंत्रण और कानून-व्यवस्था तक सीमित नहीं रह गई है। अब पुलिस समाज के प्रति संवेदनशील सहयोगी की भूमिका भी निभा रही है। सूरत पुलिस ने जिस प्रकार हर मामले में मानवीय दृष्टिकोण अपनाया, उसने पुलिस और जनता के बीच विश्वास को और मजबूत किया है।

परीक्षा समाप्त होने के बाद कई अभ्यर्थियों और उनके अभिभावकों ने पुलिस अधिकारियों का आभार व्यक्त किया। उनका कहना था कि यदि समय पर सहायता नहीं मिलती तो वर्षों की तैयारी और मेहनत व्यर्थ हो सकती थी। कई युवाओं ने कहा कि उस दिन पुलिस उनके लिए किसी देवदूत से कम नहीं थी।

रांदेर पुलिस ने इस अवसर पर अभ्यर्थियों से अपील भी की कि भविष्य में किसी भी परीक्षा के लिए यदि दूसरे शहर या क्षेत्र में जाना हो तो एक दिन पहले परीक्षा केंद्र का सत्यापन कर लें। साथ ही कॉल लेटर, पहचान पत्र और अन्य आवश्यक दस्तावेजों को सुरक्षित रखें। किसी भी आपात स्थिति में घबराने के बजाय तुरंत नजदीकी पुलिस स्टेशन या 112 हेल्पलाइन से संपर्क करें।

एलआरडी परीक्षा के दौरान सूरत पुलिस द्वारा दिखाई गई संवेदनशीलता, तत्परता और मानवीय दृष्टिकोण ने यह साबित कर दिया कि वर्दी केवल कानून लागू करने का प्रतीक नहीं, बल्कि जरूरत पड़ने पर लोगों के सपनों और भविष्य की रक्षा करने की जिम्मेदारी भी निभाती है। रविवार का दिन सूरत के उन सैकड़ों युवाओं के लिए हमेशा यादगार रहेगा, जिनके लिए पुलिस ने केवल कर्तव्य नहीं निभाया, बल्कि उनके जीवन के महत्वपूर्ण अवसर को बचाने में निर्णायक भूमिका निभाई।

श्याम भक्तों ने जताया भरोसा, कार्यकारिणी चुनाव में 'मेरा श्याम सबका श्याम' पैनल की ऐतिहासिक जीत

सूरत। वीआईपी रोड स्थित श्री श्याम मंदिर, सूरतधाम की कार्यकारिणी के लिए संपन्न चुनाव में श्याम भक्तों ने एक बार फिर संगठनात्मक एकता, पारदर्शिता और विकास के प्रति अपना स्पष्ट संदेश दिया है। रविवार को वेसू स्थित अग्रवाल विद्या विहार स्कूल में आयोजित चुनाव में 'मेरा श्याम सबका श्याम' ग्रुप ने शानदार प्रदर्शन करते हुए सभी 12 सीटों पर जीत दर्ज कर इतिहास रच दिया। चुनाव परिणामों ने यह स्पष्ट कर दिया कि मंदिर परिवार के सदस्यों ने इस पैनल की कार्यशैली, सेवा भावना और भविष्य की योजनाओं पर पूर्ण विश्वास जताया है।

श्री श्याम मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि सूरत के हजारों श्रद्धालुओं की आस्था, सेवा और सामाजिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र भी है। ऐसे में कार्यकारिणी चुनाव को लेकर लंबे समय से मंदिर परिवार और समाजजनों के बीच विशेष उत्सुकता बनी हुई थी। रविवार को सुबह से ही मतदान केंद्र पर सदस्यों का उत्साह देखने को मिला। बड़ी संख्या में मंदिर परिवार के सदस्य मतदान के लिए पहुंचे और शांतिपूर्ण वातावरण में अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

चुनाव अधिकारी साँवरप्रसाद बुधिया, गिरीश मित्तल एवं बजरंगलाल गाडोदिया की देखरेख में पूरी प्रक्रिया पारदर्शी और व्यवस्थित ढंग से संपन्न हुई। सुबह 10 बजे मतदान शुरू हुआ और शाम 5 बजे तक लगातार मतदान चलता रहा। मतदान समाप्त होने के बाद मतगणना शुरू की गई, जिसके बाद देर शाम परिणाम घोषित किए गए। परिणाम सामने आते ही विजयी उम्मीदवारों और उनके समर्थकों में खुशी की लहर दौड़ गई।

कार्यकारिणी में ट्रस्टी सदस्य के नौ पदों

तथा आजीवन सदस्य के तीन पदों के लिए चुनाव कराया गया था। ट्रस्टी सदस्य पदों के लिए कुल 940 मत डाले गए, जिनमें 61 प्रॉक्सी वोट शामिल थे। जांच के बाद 912 मतों को वैध घोषित किया गया। वहीं आजीवन सदस्य श्रेणी के लिए कुल 1,293 सदस्यों ने मतदान किया, जिनमें 40 प्रॉक्सी वोट शामिल रहे। इस श्रेणी में 1,281 मत वैध पाए गए। मतदान प्रतिशत और सदस्यों की सक्रिय भागीदारी ने यह साबित किया कि मंदिर परिवार लोकतांत्रिक परंपराओं को लेकर पूरी तरह जागरूक और प्रतिबद्ध है।

परिणामों में 'मेरा श्याम सबका श्याम' पैनल ने पूर्ण वर्चस्व स्थापित करते हुए सभी सीटों पर विजय प्राप्त की। ट्रस्टी सदस्य पद के लिए संजय सरावगी, अनिल रुंगटा, राजकिशोर शाह (पप्पू), रमेश अग्रवाल (विनायक), अशोक चोकडिका, विनय बेरीवाला, शिवप्रसाद पोद्दार, योगेश झाखलिया और शेखर गौरीसरिया विजयी घोषित किए गए। वहीं आजीवन सदस्य पद पर अमित सुद्रानिया, शंकरलाल मोर और सीतेश बंसल ने जीत हासिल की। विशेष बात यह रही कि चुनाव परिणामों ने 'मेरा श्याम सबका श्याम' समूह के प्रति सदस्यों के व्यापक समर्थन को उजागर किया। मंदिर परिवार के अनेक सदस्यों का मानना है कि यह जीत केवल उम्मीदवारों की व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि मंदिर के विकास, धार्मिक गतिविधियों के विस्तार और सेवा कार्यों को नई दिशा देने के लिए मिले जनसमर्थन का प्रतीक है।

परिणाम घोषित होने के बाद मंदिर परिसर और समर्थकों के बीच उत्सव जैसा माहौल बन गया। विजयी उम्मीदवारों का फूल-मालाओं से स्वागत किया गया। समर्थकों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया और श्याम बाबा के जयकारों से पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा। कई श्रद्धालुओं ने इसे मंदिर के विकास के नए अध्याय की शुरुआत बताया।

नवनिर्वाचित सदस्यों ने भी मंदिर परिवार के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह जीत जिम्मेदारी और विश्वास दोनों का प्रतीक है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि मंदिर की धार्मिक, सामाजिक और सेवा गतिविधियों को और अधिक विस्तार दिया जाएगा। साथ ही मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सुविधाओं को बेहतर बनाने, धार्मिक आयोजनों को भव्य स्वरूप देने और समाजहित के विभिन्न कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए सामूहिक रूप से कार्य किया जाएगा। समाज के वरिष्ठजनों ने भी चुनाव प्रक्रिया की सराहना करते हुए कहा कि स्वस्थ लोकतांत्रिक परंपराएं किसी भी संस्था को मजबूत बनाती हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि नई कार्यकारिणी मंदिर की गौरवशाली परंपराओं को आगे बढ़ाते हुए सेवा, संस्कार और संगठन के मूल्यों को और अधिक सशक्त करेगी।

श्री श्याम मंदिर सूरतधाम वर्षों से धार्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक समरसता और सेवा कार्यों का भी प्रमुख केंद्र रहा है। यहां आयोजित धार्मिक अनुष्ठान, भजन संध्या, सामाजिक सेवा कार्यक्रम और विभिन्न जनकल्याणकारी गतिविधियां समाज को जोड़ने का कार्य करती रही हैं। ऐसे में नई कार्यकारिणी के गठन के बाद मंदिर परिवार को आने वाले समय में नई योजनाओं और विकास कार्यों की भी उम्मीद है।

चुनाव परिणामों ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि मंदिर परिवार एकता, पारदर्शिता और विकास की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है। 'मेरा श्याम सबका श्याम' पैनल की शत-प्रतिशत सफलता को इसी विश्वास और समर्थन का प्रतीक माना जा रहा है। अब सभी की निगाहें नई कार्यकारिणी पर हैं, जिससे श्रद्धालुओं को मंदिर के विकास और सेवा कार्यों में नई ऊर्जा और नई दिशा मिलने की उम्मीद है।

मानसून की पहली मार: झारखंड में 24 घंटे में वज्रपात से 8 मौतें, कई जिलों में अलर्ट जारी

रांची। झारखंड में मानसून की दस्तक जहां किसानों और आम लोगों के लिए राहत लेकर आई है, वहीं कई इलाकों में यह बारिश जानलेवा साबित हो रही है। पिछले 24 घंटों के दौरान राज्य के विभिन्न जिलों में आकाशीय बिजली गिरने की घटनाओं ने कई परिवारों की खुशियां छीन लीं। अलग-अलग जिलों से सामने आई घटनाओं में आठ लोगों की मौत हो गई, जबकि कई अन्य लोग घायल हुए हैं। लगातार हो रही बारिश और वज्रपात की घटनाओं ने पूरे राज्य में चिंता का माहौल पैदा कर दिया है।

राज्य के विभिन्न हिस्सों में रविवार और सोमवार के बीच मौसम ने अचानक करवट ली। तेज बारिश, गरज-चमक और बिजली गिरने की घटनाओं ने कई जिलों को प्रभावित किया। सबसे अधिक असर ग्रामीण क्षेत्रों में देखने को मिला, जहां खेतों में काम कर रहे लोग, मवेशी चराने गए ग्रामीण और खुले स्थानों पर मौजूद बच्चे इसकी चपेट में आ गए। एक ही दिन में आठ लोगों की मौत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि मानसून के साथ आने वाला प्राकृतिक खतरा कितना गंभीर हो सकता है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार रांची, गढ़वा, चतरा, सरायकेला-खरसावां, गिरिडीह और जामताड़ा जिलों में अलग-अलग स्थानों पर आकाशीय बिजली गिरने की घटनाएं हुईं। रांची जिले के पिठोरिया क्षेत्र में दो किसान खेत में काम कर रहे थे। इसी दौरान अचानक मौसम खराब हुआ और तेज गर्जना के साथ बिजली गिरने से दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों ने उन्हें बचाने की कोशिश की, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

गढ़वा जिले में भी वज्रपात की दो अलग-अलग घटनाओं ने लोगों को झकझोर कर रख दिया। एक महिला बारिश से बचने के लिए सुरक्षित स्थान की तलाश कर रही थी, तभी आकाशीय बिजली उसकी चपेट में आ गई। वहीं एक बुजुर्ग ग्रामीण मवेशी चराने के लिए निकले थे। मौसम बिगड़ने के बावजूद वह खुले क्षेत्र में मौजूद थे और बिजली गिरने से उनकी भी जान चली गई। इन दोनों घटनाओं के बाद गांवों में शोक का माहौल फैल गया।

चतरा, जामताड़ा, गिरिडीह और सरायकेला-खरसावां जिलों से भी दर्दनाक खबरें सामने आईं। इन जिलों में वज्रपात की चपेट में आकर कई लोगों की मौत हुई। मृतकों में दो मासूम बच्चे भी शामिल हैं, जिनकी उम्र क्रमशः 10 और 12 वर्ष बताई जा रही है। बच्चों की असमय मौत ने पूरे क्षेत्र को गमगीन कर दिया है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है और गांवों में मातम पसरा हुआ है।

वज्रपात की इन घटनाओं में कई लोग घायल भी हुए हैं। घायलों को स्थानीय अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में भर्ती कराया गया है, जहां उनका उपचार जारी है। कुछ घायलों की हालत गंभीर बताई जा रही है। प्रशासन की ओर से प्रभावित क्षेत्रों में राहत एवं सहायता कार्य शुरू कर दिए गए हैं और मृतकों के परिजनों को सरकारी सहायता उपलब्ध कराने की प्रक्रिया भी शुरू की जा रही है।

मौसम विभाग ने भी स्थिति को गंभीर मानते हुए राज्य के कई जिलों के लिए येलो अलर्ट जारी किया है। विभाग के अनुसार अगले दो दिनों तक झारखंड के अनेक हिस्सों में तेज बारिश, गरज-चमक और वज्रपात की संभावना बनी हुई है। विशेष रूप से रांची, बोकारो, धनबाद, गुमला, पूर्वी सिंहभूम, गोड्डा, लोहरदगा, रामगढ़, सरायकेला-खरसावां और पश्चिमी सिंहभूम जिलों में लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है।

मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि मानसून के सक्रिय होने के साथ वातावरण में नमी और अस्थिरता बढ़ जाती है, जिससे बादलों के बीच विद्युत आवेश तेजी से विकसित होता है। यही स्थिति वज्रपात की घटनाओं को जन्म देती है। ग्रामीण क्षेत्रों में खेतों में काम करने वाले किसान, खुले मैदानों में मौजूद लोग और पेड़ों के नीचे खड़े व्यक्ति सबसे अधिक जोखिम में रहते हैं। प्रशासन और आपदा प्रबंधन विभाग ने लोगों से सावधानी बरतने की अपील की है। अधिकारियों ने कहा है कि खराब मौसम के दौरान खुले मैदानों में जाने से बचें, पेड़ों के नीचे शरण न लें और बिजली के खंभों या धातु की वस्तुओं से दूर रहें। यदि अचानक मौसम खराब हो जाए तो तुरंत किसी सुरक्षित भवन या पक्के आश्रय स्थल में चले जाएं। किसानों को भी सलाह दी गई है कि गरज-चमक की स्थिति में खेतों में काम रोक दें और मौसम सामान्य होने के बाद ही कार्य शुरू करें।

विशेषज्ञों का मानना है कि झारखंड में हर वर्ष मानसून के दौरान वज्रपात से बड़ी संख्या में लोगों की जान जाती है। इसके बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता का स्तर अभी भी पर्याप्त नहीं है। कई लोग मौसम चेतावनियों को गंभीरता से नहीं लेते, जिसके कारण ऐसी घटनाओं में जानमाल का नुकसान बढ़ जाता है। इसलिए मौसम विभाग द्वारा जारी चेतावनियों का पालन करना और समय रहते सुरक्षित स्थानों पर पहुंचना बेहद जरूरी है।

राज्य सरकार ने भी संबंधित जिलों के प्रशासन को सतर्क रहने और किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहने के निर्देश दिए हैं। आपदा प्रबंधन विभाग लगातार मौसम की स्थिति पर नजर बनाए हुए है। अधिकारियों का कहना है कि यदि मौसम विभाग की चेतावनियों का पालन किया जाए तो ऐसी कई दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है।

मानसून की शुरुआत के साथ हुई इन दर्दनाक घटनाओं ने एक बार फिर यह याद दिलाया है कि प्राकृतिक आपदाओं के प्रति सतर्कता और जागरूकता कितनी आवश्यक है। फिलहाल राज्य के कई हिस्सों में बारिश का दौर जारी है और मौसम विभाग ने लोगों से अतिरिक्त सावधानी बरतने की अपील की है, ताकि आने वाले दिनों में किसी और परिवार को इस तरह की त्रासदी का सामना न करना पड़े।

जनकल्याण को घर-घर पहुंचाने का अभियान शुरू, सूरत में शिविर से हजारों नागरिकों को मिली योजनाओं की सीधी सौगात

सूरत। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के जनविश्वास, सुशासन, विकास और जनकल्याण के 12 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर सूरत महानगरपालिका ने नागरिकों तक सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे पहुंचाने के उद्देश्य से शहरी 'जन कल्याण शिविर' अभियान का शुभारंभ किया। रांदेर जोन से शुरू हुए इस अभियान को प्रशासन और जनप्रतिनिधियों ने जनसेवा तथा सुशासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल बताया। नवयुग कॉलेज परिसर में आयोजित पहले शिविर में बड़ी संख्या में नागरिकों, लाभार्थियों और जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न सरकारी योजनाओं के पात्र लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र, सहायता सामग्री, किट और अन्य सुविधाएं प्रदान की गईं।

शिविर का मुख्य उद्देश्य सरकारी योजनाओं और सेवाओं को नागरिकों के दरवाजे तक पहुंचाना तथा पात्र लोगों को बिना किसी जटिल प्रक्रिया के लाभ उपलब्ध कराना था। कार्यक्रम में विधानसभा के उपाध्यक्ष पूर्णेश मोदी और सूरत की महापौर मायाबेन मावाणी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उनके अलावा सांसद मुकेश दलाल, विधायक मुकेश पटेल, नगर निगम के वरिष्ठ अधिकारी, जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में नागरिकों ने भी भाग लिया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्णेश मोदी ने कहा कि पिछले 12 वर्षों में भारत ने विकास, पारदर्शिता और जनकल्याण के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने ऐसी अनेक योजनाएं शुरू कीं, जिनका सीधा लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचा है। उन्होंने बताया कि जनधन योजना ने करोड़ों लोगों को बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ा, प्रधानमंत्री आवास योजना ने गरीब परिवारों को पक्का घर उपलब्ध कराया, आयुष्मान भारत योजना ने स्वास्थ्य सुरक्षा का नया मॉडल स्थापित किया और जल जीवन मिशन ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने की दिशा में बड़ा बदलाव लाया।

उन्होंने कहा कि किसान सम्मान निधि योजना के माध्यम से किसानों को आर्थिक सहायता मिल रही है, मुद्रा योजना ने छोटे उद्यमियों को

आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया है और उज्ज्वला योजना ने करोड़ों महिलाओं को धुएं से मुक्ति दिलाकर उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया है। इसके अलावा स्टार्टअप इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसी पहलों ने युवाओं को नवाचार और रोजगार के नए अवसर प्रदान किए हैं। पूर्णेश मोदी ने कहा कि इन योजनाओं का वास्तविक उद्देश्य केवल आर्थिक सहायता देना नहीं, बल्कि लोगों को सशक्त बनाकर उन्हें विकास प्रक्रिया का भागीदार बनाना है।

उन्होंने नागरिकों से आह्वान किया कि विकसित भारत और विकसित गुजरात के निर्माण के लिए सभी को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। उन्होंने कहा कि वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य केवल सरकार का नहीं, बल्कि देश के प्रत्येक नागरिक का सामूहिक संकल्प होना चाहिए। इसके लिए समाज के हर वर्ग को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना आवश्यक है।

महापौर मायाबेन मावाणी ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य सरकार और सूरत महानगरपालिका प्रधानमंत्री के विकसित भारत के विजन को साकार करने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही हैं। उन्होंने कहा कि जन कल्याण शिविर इसी सोच का परिणाम हैं, जहां सरकारी योजनाओं की जानकारी देने के साथ-साथ पात्र नागरिकों को मौके पर ही लाभ उपलब्ध कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रशासन की प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी पात्र व्यक्ति सरकारी योजनाओं से वंचित न रहे। महापौर ने कहा कि कई बार जानकारी के अभाव, प्रक्रियात्मक कठिनाइयों या अन्य कारणों से जरूरतमंद लोग योजनाओं का लाभ नहीं ले पाते। ऐसे शिविरों के माध्यम से सरकार सीधे नागरिकों तक पहुंचकर उनकी समस्याओं का समाधान कर रही है। उन्होंने बताया कि शिविरों में विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहते हैं, जिससे नागरिकों को एक ही स्थान पर अनेक सेवाएं और योजनाओं की जानकारी उपलब्ध हो जाती है।

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न सरकारी योजनाओं से जुड़े लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र और सहायता सामग्री वितरित की गई। कई लाभार्थियों ने मौके पर ही योजनाओं का लाभ प्राप्त किया। लाभार्थियों ने कहा कि इस प्रकार के शिविर उनके लिए बेहद उपयोगी हैं क्योंकि इससे उन्हें सरकारी कार्यालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़ते और योजनाओं की जानकारी भी आसानी से मिल जाती है।

शिविर में उपस्थित अधिकारियों ने नागरिकों को विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। लोगों को बताया गया कि वे किस प्रकार योजनाओं का लाभ उठा सकते हैं, आवेदन प्रक्रिया क्या है और किन दस्तावेजों की आवश्यकता होती है। इसके अलावा कई मामलों में तत्काल आवेदन स्वीकार कर आवश्यक प्रक्रिया भी पूरी की गई।

कार्यक्रम में स्टैंडिंग कमेटी के अध्यक्ष राजनभाई पटेल, सत्तापक्ष नेता अल्पाबेन मेहता, दंडक उर्मिलाबेन त्रिपाठी, शहर संगठन अध्यक्ष परेश पटेल सहित अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। सभी ने इस पहल को जनसंपर्क और जनसेवा का प्रभावी माध्यम बताते हुए इसकी सराहना की। उन्होंने कहा कि ऐसे शिविरों के माध्यम से सरकार और जनता के बीच दूरी कम होती है तथा लोगों को अपनी समस्याओं के समाधान का सीधा मंच मिलता है।

नागरिकों की बड़ी भागीदारी ने यह भी दर्शाया कि लोगों में सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ रही है और वे इनका लाभ लेने के लिए आगे आ रहे हैं। आयोजकों के अनुसार आने वाले दिनों में शहर के अन्य क्षेत्रों में भी इसी प्रकार के जन कल्याण शिविर आयोजित किए जाएंगे, ताकि अधिक से अधिक लोगों तक योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा सके।

सूरत में शुरू हुआ यह अभियान केवल सरकारी योजनाओं के वितरण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य नागरिकों को शासन की विकास यात्रा से जोड़ना और समाज के अंतिम व्यक्ति तक सुविधाओं की पहुंच सुनिश्चित करना है। जनप्रतिनिधियों और प्रशासन का मानना है कि जब योजनाओं का लाभ सीधे पात्र लोगों तक पहुंचेगा, तभी विकसित भारत और विकसित गुजरात का सपना साकार हो सकेगा। इसी सोच के साथ सूरत महानगरपालिका ने जन कल्याण शिविरों की शुरुआत कर नागरिकों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है।

12 वर्ष : जन विश्वास के, विकास के, जन कल्याण के

गुजरात साइंस सिटी : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन से बना वैश्विक ज्ञान और आधुनिक प्रगति का जीवंत प्रतीक

▸▸ मई-2026 तक लगभग 1.43 करोड़ से अधिक विज्ञान प्रेमियों और विद्यार्थियों ने साइंस सिटी का दौरा किया

▸▸ नेचर पार्क, रोबोटिक्स, एक्वेटिक, एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस साइंस गैलरी, प्लैनेट अर्थ, एनर्जी एजुकेशन पार्क तथा म्यूजिकल फाउंटेन के माध्यम से 'गुजरात साइंस सिटी' देश का अग्रणी विज्ञान केंद्र बना है

▸▸ वर्तमान में एविएशन एंड डिफेंस गैलरी तथा ह्यूमन एंड बायोलॉजिकल साइंस गैलरी का निर्माण कार्य जारी है, जो विज्ञान जगत में गुजरात के लिए एक बड़ी उपलब्धि के समान होगा

▸▸ साइंस सिटी केवल एक पर्यटन स्थल नहीं है,बल्कि नई पीढ़ी में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अनुसंधान और नवाचार (इनोवेशन) को प्रोत्साहित करने वाला एक श्रेष्ठ माध्यम है

गांधीनगर, 14 जून : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व के 12 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण होने के अवसर पर गुजरात में हुए अभूतपूर्व विकास कार्यों में अहमदाबाद स्थित 'गुजरात साइंस सिटी' एक गौरवशाली और प्रेरणादायक उपलब्धि के रूप में उभरा है। विज्ञान और टेक्नोलॉजी को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने के प्रधानमंत्री के विजन के परिणामस्वरूप आज गुजरात साइंस सिटी देश के अग्रणी विज्ञान केंद्रों में सर्वोच्च स्थान रखता है। विश्वस्तरीय सुविधाओं के साथ यह केंद्र आज ज्ञान, नवाचार और प्रगति का वैश्विक प्रतीक बन गया है।

वर्ष 2006 से मई 2026 तक लगभग 1.43 करोड़ से अधिक विज्ञान प्रेमियों तथा विद्यार्थियों ने साइंस सिटी का दौरा कर विज्ञान को नजदीक से समझने, अनुभव करने और सीखने का प्रयास किया है।

अहमदाबाद स्थित 'गुजरात साइंस सिटी' की स्थापना 10 अगस्त 1999 को की गई थी। श्री नरेन्द्र मोदी के गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में कार्यकाल के दौरान शुरू किए गए आधुनिकीकरण और विस्तार के भगीरथ प्रयासों से इस संस्था की विकास यात्रा को और अधिक गति मिली। विज्ञान को केवल पुस्तकों तक सीमित न रखते हुए उसे अनुभव-आधारित और रोचक बनाने के दृष्टिकोण के साथ साइंस सिटी को सतत नई दिशा दी गई है। आज यह संस्था केवल विज्ञान के प्रदर्शन का केंद्र नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, शिक्षकों और परिवारों के लिए प्रेरणा का एक सशक्त माध्यम बन गई है।

प्रधानमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी ने पहली बार 9 जनवरी 2017 को 'नोबेल प्राइज सीरीज' कार्यक्रम के दौरान तथा दूसरी बार 27 सितंबर 2023 को 'वाइब्रेंट गुजरात' की सक्सेस समिट के दौरान 'गुजरात साइंस सिटी' का दौरा किया था। इस यात्रा के दौरान उन्होंने केंद्र के वैश्विक स्तर के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और मार्गदर्शक सुझाव दिए थे, जिन्हें आज गुजरात सरकार साकार कर रहीं हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री अर्जुन मोढवाडिया के सतत प्रयासों से आगामी समय में साइंस सिटी में एविएशन एंड डिफेंस गैलरी, ह्यूमन एंड बायोलॉजिकल साइंस गैलरी तथा अनलीशिंग द डिजिटल फ्यूचर गैलरी जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक आकर्षणों का समावेश होने जा रहा है।

विद्यार्थियों और विज्ञान प्रेमियों के लिए प्रमुख आकर्षण

एक्वेटिक गैलरी :

▸▸ एक्वेटिक गैलरी भारत के सबसे बड़े मछली घरों में से एक है, जिसमें 68 टैंक और 188 प्रजातियां देखने को मिलती हैं।

▸▸ इस एक्वेरियम में 11,600 से अधिक मछलियां तथा शार्क भी मौजूद हैं। यहां 28 मीटर लंबी 'शार्क टनल' भी स्थित है।

▸▸ इस गैलरी में इंडियन जोन, एशियन जोन और अफ्रीकन जोन सहित 10 विभिन्न समुद्री क्षेत्रों का निर्माण किया गया है। इसके अलावा यहां अफ्रीकन पेंगुइन का आकर्षक प्रदर्शन तथा आधुनिक 5डी थिएटर की सुविधा भी उपलब्ध है।

एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस साइंस गैलरी

▸▸ इस गैलरी का निर्माण 12,797 वर्ग मीटर क्षेत्र में सौरमंडल की थीम पर किया गया है।

▸▸ इस गैलरी में 172 सीटों वाला हाइब्रिड प्लैनेटोरियम, स्पेस ऑब्जर्वेशन के लिए टेलीस्कोप युक्त विशेष केंद्र तथा 150 से अधिक अद्भुत प्रदर्शनी सामग्री मौजूद हैं।

रोबोटिक्स गैलरी

▸▸ 11,000 वर्ग मीटर में फैली इस गैलरी में 79 प्रकार के कुल 202 रोबोट देखने को मिलते हैं।

▸▸ इस गैलरी में मानव जैसे दिखने वाले 'ह्यूमनॉइड रोबोट', एक अत्याधुनिक वीआर/एआर गैलरी तथा एक रोबो कैफे मौजूद है, जहां रोबोट शेफ द्वारा भोजन तैयार किया जाता है और रोबोट वेटर द्वारा परोसा जाता है।

आईमैक्स 3डी थिएटर

▸▸ इस थिएटर में रोमांचक 3डी अनुभव का आनंद लिया जा सकता है।

▸▸ थिएटर में हबल 3डी, स्पेस स्टेशन, मैग्निफिसेंट डेसोलेशनः वॉकिंग ऑन द मून तथा टी-रेक्स : बैक टू द क्रेटेशियस जैसी फिल्मों का प्रदर्शन किया जाता है।

मल्टीमीडिया लेजर और फाउंटेन शो

▸▸ इस म्यूजिकल फाउंटेन में 36×16 मीटर की वॉटर स्क्रीन तथा 16×9 मीटर की दो स्क्रीन का उपयोग कर 70 मीटर लंबे आकर्षक 3डी प्रोजेक्शन के माध्यम से दर्शकों को एक अद्भुत और रोमांचक अनुभव प्रदान किया जाता है।

प्लैनेट अर्थ

▸▸ यह गैलरी आगंतुकों को भूकंप और ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदाओं, मानव शरीर की संरचना, जैव विविधता तथा पृथ्वी पर जीवन के विकास के बारे में रोचक जानकारी प्रदान करती है।

▸▸ इसके साथ ही यहां भूमिगत कोयला खदान का मॉडल तथा एक 4डी थिएटर भी देखने को मिलता है।

नेचर पार्क

▸▸ 20 एकड़ में फैले इस पार्क में वॉकिंग और जॉगिंग ट्रैक, मिस्ट फॉरेस्ट (धुंध से आच्छादित जंगल), बटरफ्लाई गार्डन, ओपन जिम, चेस गार्डन तथा योगा गार्डन जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

▸▸ यहां विलुप्त हो चुके प्राणियों की 15 प्रतिमाएं भी स्थापित की गई हैं, जिनमें मैमथ, टेरर बर्ड और सेबर-टूथ लायन जैसे जीव शामिल हैं।

एनर्जी एजुकेशन पार्क

▸▸ यह पार्क ऊर्जा संरक्षण और घटते प्राकृतिक संसाधनों के प्रति आगंतुकों में जागरूकता पैदा करता है।

▸▸ यहां की प्रदर्शनी प्राचीन भारतीय दर्शन के पांच मूलभूत तत्वों; तेज, मरुत, अप, क्षिति और व्योम पर आधारित है।

लाइफ साइंस पार्क

▸▸ इस पार्क में एक नदी तंत्र, बटरफ्लाई पार्क, पक्षीघर (एवियरी), उड़ान न भर सकने वाले पक्षियों का केंद्र तथा एक टिश्यू कल्चर प्रयोगशाला स्थापित है।

हॉल ऑफ साइंस और हॉल ऑफ स्पेस

▸▸ हॉल ऑफ साइंस एक विशाल ओपन लैबोरेटरी है, जहां आगंतुक स्वयं प्रयोग करके प्रकाश, दृष्टि, गति विज्ञान और ध्वनि के सिद्धांतों को रोचक तरीके से समझ सकते हैं।

▸▸ हॉल ऑफ स्पेस : इस विभाग में आगंतुकों के लिए मंगल ग्रह की रोमांचक यात्रा का अनुभव कराने वाली 'मिशन टू मार्स' विशेष सिम्युलेटेड राइड उपलब्ध है।

साइंस सिटी की विकास यात्रा के नए मील के पत्थर

▸▸ साइंस सिटी की वैश्विक लोकप्रियता और वैज्ञानिक समृद्धि को और बढ़ाने के उद्देश्य से प्रथम चरण में दो नई भव्य गैलरियों का निर्माण कार्य जारी है, जो विज्ञान जगत में गुजरात के लिए एक बड़ी उपलब्धि के समान होंगी।

एविएशन एंड डिफेंस गैलरी

▸▸ इस गैलरी के माध्यम से आगंतुकों को देश की आधुनिक रक्षा तकनीकों, सैन्य हथियारों, विमान विज्ञान (एविएशन) तथा आकाश में मानव की प्रगति का रोमांचक अनुभव प्राप्त होगा।

ह्यूमन एंड बायोलॉजिकल साइंस गैलरी

▸▸ यह गैलरी मानव शरीर की जटिल आंतरिक संरचना, जैविक विज्ञान के विभिन्न पहलुओं तथा भविष्य की चिकित्सा और वैज्ञानिक संभावनाओं के बारे में अत्यंत इंटरैक्टिव डिजिटल माध्यमों से ज्ञान प्रदान करेगी।

आगंतुकों के लिए अन्य आकर्षण

▸▸ विज्ञान भवन एक सम्पूर्ण एयर-कंडीशन्ड पीईबी भवन है, जिसमें एलईडी स्क्रीन, विशाल मंच तथा लगभग 5,000 दर्शकों के बैठने की क्षमता उपलब्ध है। साइंस ड्रामा और मैजिक शो के आयोजन के लिए 1,200 दर्शकों की क्षमता वाला एक ओपन-एयर थिएटर भी यहां स्थित है। नोबेल डोम 500 सीटों की क्षमता वाला एक एयर कंडीशन्ड भवन है, जिसे विशेष रूप से ट्रैवलिंग एग्जीबिशन और वैज्ञानिक वर्कशॉप के लिए तैयार किया गया है।

विशेष रूप से बच्चों के लिए विकसित चिल्ड्रन एक्टिविटी सेंटर प्रायोगिक गतिविधियों, भौतिक विज्ञान के प्रयोगों तथा रासायनिक प्रक्रियाओं को सीखने के लिए एक अनूठा केंद्र है। यहां 30 सीटों वाली एक सिम्युलेटर थ्रिल राइड भी उपलब्ध है, जो आगंतुकों को रोलर कोस्टर की सवारी, डायनो सफारी तथा एरोबैटिक विमान उड़ाने का रोमांचक अनुभव प्रदान करती है।

महानुभावों एवं आगंतुकों की प्रतिक्रियाएं

श्री आशीष सोनी, वैज्ञानिक/ इंजीनियर, एसएसी : इसरो

मेरे लिए विज्ञान और अंतरिक्ष हमेशा से जिज्ञासा का विषय रहे हैं। यहां जिस प्रकार 'एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस साइंस गैलरी' का विकास किया गया है, वह प्रत्येक व्यक्ति और विशेष रूप से विद्यार्थियों की ज्ञान-पिपासा को संतुष्ट करता है। प्राचीन अंतरिक्ष विज्ञान से लेकर आज के आधुनिक विश्व और भविष्य की अंतरिक्ष यात्रा तक की सभी जानकारियां इस गैलरी में समाहित की गई हैं। इस गैलरी का भ्रमण करके मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई है और अहमदाबाद में हमारी अपनी साइंस सिटी में इतनी भव्य सुविधा उपलब्ध होने पर मुझे गर्व महसूस होता है। भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं हैं। यह लिखते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि आप वास्तव में सभी के ज्ञान में वृद्धि कर रहे हैं।

श्री दीपेश केडिया, आईएएस (भारतीय प्रशासनिक सेवा)

स्पेस गैलरी की यह मेरी पहली यात्रा थी और इसका अनुभव मेरी कल्पना से भी कहीं अधिक अद्भुत रहा। मैं यह अनुशंसा करता हूं कि राज्य के प्रत्येक विद्यार्थी को प्लैनेटेरियम का अनुभव अवश्य कराया जाना चाहिए, क्योंकि यह पूरे ब्रह्मांड के इतिहास को अत्यंत संक्षिप्त और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करता है। यहां के शिक्षकों ने भी विभिन्न जटिल विषयों को बहुत सरलता से समझाया। इस गैलरी के विकासकर्ताओं को मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

श्री गिरीश कामदार – आगंतुक

साइंस सिटी की हमारी यात्रा का अनुभव अत्यंत अद्भुत रहा। बच्चों के लिए यह एक बहुत ही शैक्षणिक और ज्ञानवर्धक स्थान है। मेरा मानना है कि प्रत्येक माता-पिता को अपने बच्चों के साथ यहां अवश्य आना चाहिए, ताकि वे सीखने के साथ-साथ विज्ञान को नजदीक से समझ और अनुभव कर सकें।

श्री चंद्रेश रांदेरिया : आगंतुक

हमने हाल ही में गुजरात साइंस सिटी का भ्रमण किया और हमारा अनुभव अत्यंत अद्भुत रहा। यहां की सभी सुविधाएं उत्कृष्ट थीं तथा पूरे परिसर का संचालन बहुत व्यवस्थित ढंग से किया गया था। विशेष रूप से 5D शो वास्तव में अद्भुत और मनोरंजक था। हम वहां के दो स्टाफ सदस्यों का विशेष रूप से धन्यवाद करना चाहते हैं, जिन्होंने अत्यंत विनम्रता के साथ हमारी सहायता की। उनके सहयोग और मार्गदर्शन से हमारा अनुभव और भी सुखद बन गया। इस उत्कृष्ट आतिथ्य के लिए हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। परिवार और मित्रों के साथ घूमने के लिए यह उत्तम स्थान है।

श्री आशीष – आगंतुक

यहां प्रवेश करने से पहले हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि यह स्थान इतना अद्भुत होगा। किसी को भी यहां आने का अवसर नहीं चूकना चाहिए। यहां से हमें बहुत कुछ नया जानने और सीखने को मिलता है।

आज गुजरात साइंस सिटी नए भारत के विकास विजन का एक जीवंत उदाहरण है। दूरदर्शी नेतृत्व, सुदृढ़ योजना और निरंतर विकास के परिणामस्वरूप साइंस सिटी ने सफलता की जो गौरवगाथा रची है, वह गुजरात मॉडल की एक गौरवशाली उपलब्धि है।गुजरात साइंस सिटी, अहमदाबाद द्वारा जारी जानकारी में उल्लेख किया गया है कि आने वाले समय में नई गैलरियों और आधुनिक परियोजनाओं के साथ साइंस सिटी विज्ञान प्रसार और जनजागरूकता के क्षेत्र में और भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी तथा लाखों युवाओं को विज्ञान के प्रति प्रेरित करती रहेगी।

शौर्य, सम्मान और एकता का अद्भुत संगम बना महाराणा प्रताप जयंती समारोह

सूरत। वीरता, स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति के प्रतीक Maharana Pratap की 484वीं जयंती पर सूरत में निकली भव्य शौर्य रैली ने राजपूताना परंपरा, सामाजिक एकजुटता और सांस्कृतिक गौरव का अनूठा संदेश दिया। राजस्थान राजपूत समाज द्वारा आयोजित इस विशाल रैली का गोडादरा क्षेत्र में राजस्थान युवा संघ ने अत्यंत उत्साह, श्रद्धा और सम्मान के साथ स्वागत किया। पूरे आयोजन के दौरान वातावरण देशभक्ति, शौर्य और समाज के गौरवपूर्ण इतिहास की स्मृतियों से सराबोर रहा।

जैसे ही शौर्य रैली गोडादरा क्षेत्र में निर्धारित स्वागत स्थल पर पहुंची, वहां पहले से मौजूद समाजबंधुओं, युवाओं, महिलाओं और बच्चों ने जोरदार स्वागत किया। स्वागत स्थल को विशेष रूप से सजाया गया था और रैली के आगमन के साथ ही उत्साह अपने चरम पर पहुंच गया। राजस्थान युवा संघ के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने जेसीबी मशीनों के माध्यम से पुष्पवर्षा कर महाराणा प्रताप के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की। आकाश से बरसते पुष्पों के बीच "महाराणा प्रताप अमर रहें" के जयघोष पूरे क्षेत्र में गूंज उठे, जिससे

माहौल गौरव और उत्साह से भर गया।

कार्यक्रम केवल महाराणा प्रताप की जयंती तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समाज के उन व्यक्तित्वों को भी याद किया गया जिन्होंने संगठन और समाज सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस अवसर पर राजस्थान राजपूत समाज के पूर्व अध्यक्ष एवं राजस्थान युवा संघ के अध्यक्ष रहे स्वर्गीय विक्रम सिंह को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई। समाज के युवाओं ने "विक्रम सिंह अमर रहें" और "महाराणा प्रताप अमर रहें" के गगनभेदी नारों के साथ उनके योगदान को याद किया। इन नारों ने उपस्थित लोगों में सामाजिक एकता, सम्मान और प्रेरणा का भाव और अधिक प्रबल कर दिया। रैली में बड़ी संख्या में समाज के विभिन्न वर्गों की सहभागिता देखने को मिली। युवा पीढ़ी जहां हाथों में ध्वज और बैनर लेकर उत्साहपूर्वक चल रही थी, वहीं महिलाओं और बच्चों ने भी पूरे जोश के साथ भागीदारी निभाई। समाज के वरिष्ठजनों ने महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़ी प्रेरणादायी घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि उनका संघर्ष केवल मेवाड़ की रक्षा तक सीमित नहीं था, बल्कि वह स्वाभिमान, स्वतंत्रता और राष्ट्रभक्ति के सर्वोच्च आदर्शों का प्रतीक था। उनका जीवन आज भी समाज और राष्ट्र को प्रेरणा देता है। कार्यक्रम के दौरान सेवा और सामाजिक दायित्व की भावना भी प्रमुख रूप से दिखाई दी। राजस्थान युवा संघ के कार्यकर्ता प्रमोद शर्मा और उनकी टीम द्वारा शीतल जल सेवा तथा आइसक्रीम वितरण की विशेष व्यवस्था की गई थी। गर्म मौसम के बीच इस सेवा कार्य की उपस्थित लोगों ने मुक्त कंठ से सराहना की। समाज के अनेक सदस्यों ने कहा कि ऐसे आयोजन केवल सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने का माध्यम नहीं होते, बल्कि समाज में सेवा, सहयोग और भाईचारे की भावना को भी मजबूत करते हैं। इस अवसर पर राजस्थान राजपूत समाज के युवा अध्यक्ष पिंटू बन्ना और उनकी कार्यकारिणी का दुपट्टा पहनाकर सम्मानपूर्वक स्वागत किया गया। समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने युवा नेतृत्व की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि नई पीढ़ी समाज की परंपराओं और मूल्यों को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है, जो भविष्य के लिए अत्यंत सकारात्मक संकेत है। पूरे कार्यक्रम के दौरान राजपूताना संस्कृति, परंपरा और गौरव की झलक स्पष्ट दिखाई दी। शौर्य रैली ने न केवल महाराणा प्रताप के आदर्शों को स्मरण कराया, बल्कि समाज को एक सूत्र में बांधने का भी कार्य किया। आयोजन के अंत में उपस्थित लोगों ने समाज की एकता, संगठन की मजबूती और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का सामूहिक संकल्प लिया। शौर्य रैली और स्वागत समारोह ने यह संदेश दिया कि इतिहास के महान व्यक्तित्व केवल स्मरण करने के लिए नहीं होते, बल्कि उनके आदर्श वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को दिशा देने का कार्य करते हैं।

श्रम न्यायालय ने वीएमसी को झटका दिया: अवैध रूप से बर्खास्त किए गए ड्राइवर को 5.92 लाख का मुआवजा देने का आदेश

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। श्रम न्यायालय ने वडोदरा नगर निगम (वीएमसी) के वाहन पूल शाखा में ड्राइवर के पद पर कार्यरत एक कर्मचारी की अवैध बर्खास्तगी के मामले में निगम को करारा झटका दिया है। ड्राइवर को लगातार 513 दिनों तक और एक वर्ष में 240 से अधिक दिनों तक काम करने के बावजूद बर्खास्त कर दिया गया था। श्रम न्यायालय ने निगम के इस निर्णय को कानून के विरुद्ध घोषित करते हुए एक ऐतिहासिक आदेश जारी किया है, जिसमें पीड़ित कर्मचारी को मुआवजे के रूप में 5,92,444 रुपये (लगभग 5.92 लाख रुपये) और अदालत के खर्च के रूप में 10,000 रुपये अगले 30 दिनों के भीतर भुगतान करने का आदेश दिया गया है।

याचिकाकर्ता मोहम्मद रफीक अल्लाहरख़्ख़ा शेख ने वर्ष 1992 में वडोदरा नगर निगम में अस्थायी चालक के रूप में काम शुरू किया था। हालांकि, निगम अधिकारियों ने श्रम कानून का उल्लंघन करते हुए, उन्हें बिना किसी पूर्व सूचना या वित्तीय मुआवजे के 1 अक्टूबर, 2002 को अचानक नौकरी से बर्खास्त कर दिया। मोहम्मद रफीक ने इस अन्याय के खिलाफ श्रम न्यायालय का रुख किया।

इस मामले में कानूनी लड़ाई लंबी चली। 2009 में दायर संदर्भ मामले में, श्रम न्यायालय ने 2016 में याचिकाकर्ता को 20% बकाया वेतन (पिछला वेतन) के साथ बहाल करने का आदेश दिया था। निगम ने श्रम न्यायालय के इस आदेश को उच्च न्यायालय में चुनौती दी।

लेकिन उच्च न्यायालय ने निगम की अर्जी खारिज कर दी। उच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद, प्रशासन ने 2018 तक आवेदक को नौकरी नहीं दी। बाद में, जब वह बेरोजगार था, तो उसे स्थायी कर्मचारी के रूप में कोई लाभ नहीं दिया गया। अंततः, आवेदक को 2017 में अपने बकाया 9.21 लाख रुपये की वसूली के लिए अर्जी दाखिल करनी पड़ी।

श्रम न्यायालय ने दोनों पक्षों के तर्कों और साक्ष्यों पर विचार करने के बाद निगम के तर्कों को पूरी तरह से खारिज कर दिया। यद्यपि उच्च न्यायालय ने नगरपालिका की अपील को खारिज कर दिया, फिर भी उसने निम्नलिखित निर्णय देते हुए मुआवजे का आदेश दिया और कंपनी को कानूनी निधि से वंचित कर दिया।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने जेतलसर, वांसजालिया वेरावल, सोमनाथ, सासण गिर एवं जूनागढ़ क्षेत्र का किया व्यापक संरक्षा निरीक्षण

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने 13 एवं 14 जून, 2026 को भावनगर मंडल के अंतर्गत विभिन्न रेलवे स्टेशनों तथा रेलखंडों का व्यापक निरीक्षण कर यात्री सुविधाओं, आधारभूत संरचना, संरक्षा, स्वच्छता एवं विकास कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान उनके साथ भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

अपने दौरे की शुरुआत में महाप्रबंधक ने वांसजालिया रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया तथा प्लेटफॉर्म, यात्री सुविधाओं एवं रेलकर्मियों के लिए उपलब्ध व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने स्टेशन संचालन, आधारभूत संरचना के रखरखाव, स्वच्छता, यात्री सुविधाओं तथा कर्मचारियों के कल्याण संबंधी व्यवस्थाओं की विस्तृत समीक्षा की। इस अवसर पर उन्होंने रेलकर्मियों

से संवाद करते हुए उनके समर्पण एवं कार्यनिष्ठा की सराहना की तथा सुरक्षित एवं निर्बाध रेल संचालन के लिए निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। इसके पश्चात श्री पाण्डेय ने जेतलसर रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया और यात्री सुविधाओं, स्टेशन परिसर की स्वच्छता, सर्कुलेटिंग एरिया तथा समग्र रखरखाव का अवलोकन किया। उन्होंने यात्रियों को बेहतर, सुरक्षित एवं सुविधाजनक यात्रा अनुभव उपलब्ध कराने हेतु आवश्यक व्यवस्थाओं की समीक्षा की तथा स्टेशन परिसर को स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित बनाए रखने पर विशेष बल दिया। जेतलसर प्रवास के दौरान महाप्रबंधक ने जेतपुर के माननीय विधायक श्री जयेशभाई विठ्ठलभाई रादड़िया एवं अन्य जनप्रतिनिधियों से भेंट कर विभिन्न रेल संबंधी विषयों एवं क्षेत्र में चल रही विकासात्मक परियोजनाओं पर चर्चा की। बैठक में यात्री सुविधाओं के विस्तार, रेल अवसंरचना के उन्नयन तथा भविष्य की विकास योजनाओं पर विचार-विमर्श किया गया। महाप्रबंधक ने जेतलसर स्टेशन पर मीडिया प्रतिनिधियों से भी संवाद किया तथा क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों की जानकारी साझा की। उन्होंने यात्री सेवाओं के उन्नयन, आधारभूत संरचना के विकास तथा रेलवे सुविधाओं के आधुनिकीकरण के लिए पश्चिम रेलवे द्वारा किए जा रहे सतत प्रयासों पर प्रकाश डाला।

जल्द चलेगी बीकानेर - साबरमती नई ट्रेन सेवा रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव दिखाएंगे हरी झंडी

गुजरात और राजस्थान के लोगों को जल्द ही एक नई रेल सेवा का उपहार मिलने जा रहा है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव शीघ्र ही अमदावाद(साबरमती)–बीकानेर(लालगढ़) एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाएंगे। यह नई रेल सेवा गुजरात के अमदावाद और राजस्थान के बीकानेर के बीच सीधा, तेज और सुविधाजनक रेल संपर्क उपलब्ध कराएगी।

यह नई एक्सप्रेस ट्रेन पश्चिम भारत के दो प्रमुख पर्यटन क्षेत्रों को आपस में जोड़ेगी। अब गुजरात के प्रसिद्ध साबरमती रिवरफ्रंट, मोढेरा सूर्य मंदिर, पाटन की रानी की वाव और अमदावाद की समृद्ध विरासत का आनंद लेना हो या फिर राजस्थान के भव्य जूनागढ़ किला, करणी माता मंदिर, लालगढ़ पैलेस तथा बीकानेर की समृद्ध संस्कृति और मरुस्थलीय पर्यटन का अनुभव करना हो, यह नई एक्सप्रेस यात्रियों को सुविधाजनक और सीधी रेल कनेक्टिविटी उपलब्ध कराएगी।

नई ट्रेन गुजरात के अमदावाद, महेसाणा, पाटन और बनासकांठा जिलों तथा राजस्थान के जालौर, बालोतरा, जोधपुर, नागौर और बीकानेर जिलों को लाभ पहुंचाएगी। ट्रेन के प्रमुख ठहराव साबरमती, महेसाणा, पाटन, भीलड़ी, धानेरा, रानीवाड़ा, मारवाड़ भीनमाल, मोदरान, जालौर, मोकलसर, समदड़ी, लूणी, जोधपुर, गोटन, मेड़ता रोड, नागौर, नोखा, बीकानेर और लालगढ़ होंगे।

लगभग 740 किलोमीटर की दूरी तय करने वाली यह नई एक्सप्रेस सेवा के प्रारंभ होने के साथ ही बीकानेर से अमदावाद तक दैनिक एक्सप्रेस रेल संपर्क स्थापित हो जाएगा। इस दैनिक ट्रेन सेवा से विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों, व्यापारियों और पर्यटकों को विशेष सुविधा प्राप्त होगी। यह ट्रेन दोनों राज्यों के क्षेत्रीय विकास, आर्थिक गतिविधियों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को नई ऊर्जा प्रदान करेगी।

हाल ही में केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने राजस्थान के लोगों को अनेक महत्वपूर्ण रेल परियोजनाओं और सेवाओं का उपहार दिया है। कुछ दिन पहले ही उन्होंने जोधपुर से विभिन्न रेल सेवाओं को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया तथा जैसलमेर में कोच केयर कॉम्पलेक्स का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर जोधपुर–दिल्ली कैंट वंदे भारत एक्सप्रेस को 20 कोचों के साथ संचालित करने की सौगात दी गई, वहीं साबरमती–जोधपुर एक्सप्रेस का विस्तार जैसलमेर तक किया गया। साथ ही जालोर से मंत्री जी द्वारा भुज–जालोर–पाली-दिल्ली नई रेल सेवा को भी हरी झंडी दिखाई गई, जिससे जालोर,पाली और आसपास के क्षेत्रों को पहली बार दिल्ली और भुज से सीधा रेल संपर्क प्राप्त हुआ।